विभागीय हिन्दी गृहपत्रिका

द्वितीय अंक, वर्ष 2019

शेवा कृति

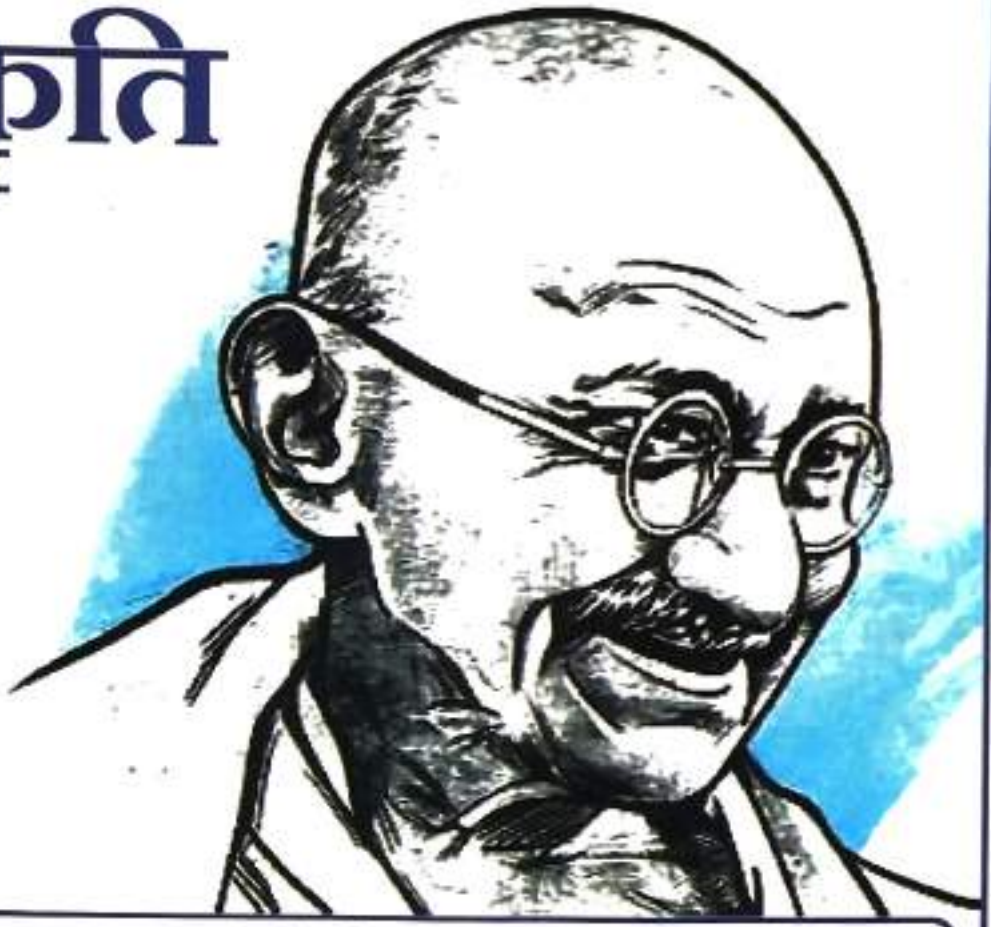

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती

सीमाशुल्क मुंबई अंचल II

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा,

तालुका-उरण, जिला रायगड – 400707 (महाराष्ट्र)

जे.एन.सी.एच. न्हावा शेवा में 15 अगस्त 2019 को
आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह की झलकियां

विभागीय गृह पत्रिका

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा

सीमाशुल्क मुंबई, अंचल-II

|| शेवा कृति ||

वर्ष 2019 द्वितीय अंक

प्रधान संरक्षक
विवेक जौहरी
प्रधान मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क

संरक्षक
जे. एस.नेगी
आयुक्त, सीमाशुल्क

संरक्षक
एस.के.विमलनाथन
आयुक्त, सीमाशुल्क

संरक्षक
संजय महेंद्रु
आयुक्त, सीमाशुल्क (जनरल)

संरक्षक
सुनील कुमार मल्ल
आयुक्त, सीमाशुल्क

संरक्षक
राजेश कुमार मिश्रा
आयुक्त, सीमाशुल्क

संपादक
विजय ज. मानवटकर
संयुक्त आयुक्त, सीमा शुल्क

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं उनसे संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नही हैं।

वर दे, वीणावादिनि वर दे।

प्रिय स्वतंत्र रव, अमृत मंत्र नव भारत में भर दे।

काट अंध उर के बंधन स्तर

बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर

कलुष भेद तम हर प्रकाश भर

जगमग जग कर दे।

नव गति नव लय ताल छंद नव

नवल कंठ नव जलद मन्द्र रव

नव नभ के नव विहग वृंद को,

नव पर नव स्वर दे।

"शेवा कृति"

विषय सूची

क्रम संख्या	रचना	रचनाकार/ संकलनकर्ता	पृष्ठ संख्या
1.	प्रधान संरक्षक की अभिव्यक्ति	-	1
2.	संरक्षकों की लेखनी से	-	2
3.	संपादकीय	विजय ज. मानवटकर	7
4.	राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती	सुमित कुमार भाटी	8
5.	यह कोई कहानी नहीं	सुनील कुमार मल्ल	11
6.	कार्यालय में राजभाषा के प्रयोग से संबंधी छोटी छोटी बातें	रूपेश एस सक्सेना	14
7.	मैं चित्रकार- कविता	अशोक झा	17
8.	भ्रष्टाचार मिटाओ- नया भारत बनाओ –लेख	जीतेंद्र कुमार	19
9.	दस्तक- कविता	अशोक झा	22
10.	एक गजल	मनमोहन धीर	23
11.	जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क, न्हावा शेवा से संबन्धित महत्वपूर्ण वित्तीय जानकारियाँ वर्ष 2018-19	रिपोर्ट	24
12.	स्वतंत्र भारत की उपलब्धियां – लेख	अशोक झा	29
13	भारत में पीढ़ी अंतराल- एक विचार	मयंक कालेरामना	32
14.	नई सुबह दफ्तर की	मनमोहन धीर	34
15.	'दिल दोस्ती दुनियादारी'- एक संस्मरण	पौर्णिमा एन. सालवे	36
16.	कंकण- कविता	संजीव सज्जन 'मुकुन्द'	40
17.	संबंधों पर सुधार- एक संकलन	रूपेश एस सक्सेना	41
18.	पहचान- कविता	अशोक झा	44
19.	बिकती हुई किस्मतें	मनमोहन धीर	45
20.	जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन 2018-19	रिपोर्ट	46
21.	कुछ लोकोक्तियाँ	रूपेश एस सक्सेना	50
22.	जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन में स्वच्छता अभियान की गतिविधियां	रिपोर्ट	51
23.	अंतराष्ट्रीय योग दिवस की झलक	रिपोर्ट	53
24.	उपलब्धियां	रिपोर्ट	55
25.	छोटे चित्रकार	-	57
26.	सीमा शुल्क मुंबई, अंचल-II में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन	रिपोर्ट	59

प्रधान संरक्षक की अभिव्यक्ति.....

विवेक जौहरी
प्रधान मुख्य आयुक्त
सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II

प्रिय सहकर्मियों, मेरे लिए यह हर्ष का विषय है कि मैं, जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा की विभागीय हिन्दी पत्रिका "शेवा कृति" का दूसरा अंक आपको सौंप रहा हूँ। अपने राजस्व संग्रहण की क्षमता में अग्रणीय मुंबई सीमाशुल्क, अंचल-II का यह सीमाशुल्क भवन, हिन्दी गृह पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से अपनी रचनात्मकता प्रस्तुत करने को तत्पर है ।

भाषा संस्कृति की वाहक है और संस्कृति अपने मौखिक और लिखित साहित्य के जरिये मूल्यों के उस सम्पूर्ण पुंज को लेकर चलती है । शब्द, अक्षरों व मालाओं का खेल नहीं बल्कि उन मूल्यों की अभिव्यक्ति है । "शेवा कृति" हमारी रचनात्मकता एवं अभिव्यक्ति का माध्यम है और हम राजभाषा हिन्दी को साधन के रूप में प्रयोग कर रहे हैं । संभवतः विभागीय पत्रिका के माध्यम से हमारे अधिकारी कार्यालयीन कार्यों में भी राजभाषा हिन्दी को उचित स्थान देने में सफल होंगे ।

"शेवा कृति" के इस द्वितीय अंक के प्रकाशन से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष जुड़े सभी अधिकारियों को मेरी ओर से शुभकामनाएं ।

वि. जौहरी

विवेक जौहरी

हमारे संरक्षक

जे.एस.नेगी
आयुक्त, अपील
सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II

"जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा" भारत के शीर्षस्थ सीमाशुल्क कार्यालयों में से एक है। सरकार द्वारा राजस्व संग्रह हेतु विविध प्रकार के प्रयोगों के लिए, विविध उपलब्धियों को हासिल करने में एवं विविध व्यापारिक गतिविधियों के कार्यान्वयन में इस सीमाशुल्क भवन ने सफल नेतृत्व किया है। इन सभी कार्यकलापों को पूर्ण करने के निमित्व हमेशा फाइलों में, राजस्व संबधी सहायक साहित्यों, नियमों में लिप्त रहने वाले अधिकारियों के द्वारा हिन्दी की गृहपत्रिका "शेवा कृति" हेतु अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्तियों को अपनी रचनाओं में उतारने का प्रयास सराहनीय है ।

मैं, गृह पत्रिका "शेवा कृति" के दूसरे अंक के प्रकाशन कार्य में लगे सभी अधिकारियों को उनके मार्ग़दर्शन के लिए एवं पत्रिका को साकार रूप देने के कार्य में लगे अन्य सभी अधिकारियों का हृदयपूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ ।

जे.एस.नेगी

हमारे संरक्षक

एस. के. विमलनाथन
आयुक्त, सीमाशुल्क
सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II

किसी भी राष्ट्र की मुख्य भाषा वही हो सकती है जिसका अपने देश की संस्कृति, सभ्यता एवं साहित्य से गहरा संबंध हो। हिन्दी अधिक से अधिक बोली एवं समझी जाने वाली भाषा है जिसने राष्ट्र की अन्य भाषाओं से एक अभूतपूर्व तारतम्यता बनाते हुए भारत संघ की राजभाषा के रूप में अपने आप को स्थापित किया है।

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा की हिन्दी की गृहपत्रिका "शेवा कृति" का दूसरा अंक अपनी पूर्ण साज सज्जा के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है। व्यस्त वित्तीय गतिविधियों के बीच सीमाशुल्क अधिकारियों को अपने वैचारिक क्षमताओं को व्यक्त करने के लिए "शेवा कृति" एक बहुत कारगर माध्यम है। पत्रिका के प्रकाशन में अधिकारियों द्वारा दिया गया योगदान सराहनीय है ।

एस. के. विमलनाथन

एस.के.विमलनाथन

हमारे संरक्षक

संजय महेंद्रु
आयुक्त, सीमाशुल्क (जनरल)
सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II

भारत संघ की राजभाषा नीति एवं प्रावधानों का पालन करना और कराना हमारा संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है। किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी अपनी भाषा से होती है। हमने जनभाषा को ही राजभाषा का दर्जा दे दिया है। हिन्दी हमारी जनभाषा है और हम इसे हृदय से अपनाएं और इसका प्रचार प्रसार करें । हमारे काम काज में राजभाषा हिन्दी का जितना विस्तार होगा, आम जनता से हमारा संवाद उतना अधिक सीधा और सुस्पष्ट होगा। हिन्दी की गृहपत्रिका "शेवा कृति" का दूसरा अंक आपको सौंप रहा हूँ ।

मेरी शुभकामना है कि पत्रिका का अनवरत विकास होता रहे और यह पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनता अभिरुचि का मापदंड बनी रहे ।

संजय महेंद्रु

हमारे संरक्षक

सुनील कुमार मल्ल
आयुक्त, सीमाशुल्क
सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II

भारत जैसे बहु भाषाभाषी देश में हिन्दी भाषा सभी को एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही है । हिन्दी आज चालीस प्रतिशत से भी अधिक भारतीयों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है और, सही अर्थों में, जनभाषा कहलाने की अधिकारिणी है। जनभाषा हिन्दी आज प्रशासन की भाषा बन गई है। हिन्दी की गृह पत्रिका "शेवा कृति" के प्रकाशन से सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में हमारे द्वारा हिन्दी के प्रचार प्रसार संबंधी अभियान को बल मिलेगा ।

इस पत्रिका के संबंध में आपके मूल्यवान विचारों और आलोचनाओं से हमें अवश्य अवगत कराएं ताकि 'शेवा कृति" का अगला अंक और भी अधिक सुरुचिकर और प्रभावी हो।

शुभकामनाएं ।

सुनील कुमार मल्ल

हमारे संरक्षक

राजेश कुमार मिश्रा
आयुक्त, सीमाशुल्क
सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II

यह हर्ष का विषय है कि जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा की हिन्दी गृह पत्रिका "शेवा कृति" के दूसरे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । आर्थिक गतिविधियों के गढ़ के रूप में पहचाने जाने वाले इस सीमाशुल्क भवन में हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में एक सुखद अनुभूति है । पत्रिका के माध्यम से राजस्व उगाही के अलावा यहाँ होने वाली अन्य गतिविधियों की भी झलकियाँ देखने को मिलती हैं। आशा करता हूँ कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में "शेवा कृति" एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करे ।

मैं "शेवा कृति" के निरंतर प्रकाशन की कामना करता हूँ ।

राजेश

राजेश कुमार मिश्रा

संपादकीय

प्रिय साथियों,

सीमाशुल्क मुंबई, अंचल-II की गृह पत्रिका "शेवा कृति" का दूसरा अंक अपनी सम्पूर्ण अभिव्यक्ति के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है । जैसा की विदित है कि भारत के राजस्व में सीमाशुल्क का बड़ा योगदान है और सीमाशुल्क के कुल प्राप्ति में एक बड़ा हिस्सा जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा का है । एक विशाल स्थापना वाले इस सीमाशुल्क गृह में राजभाषा की स्थिति अभी शैशवावस्था में ही है। सच्ची भावना से राजभाषा के प्रचार प्रसार के प्रयास जारी हैं । इतने व्यापक वित्तीय क्रिया कलापों के मध्य हिन्दी लेखन, सृजन एवं सरकारी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग अपने आप में एक अनूठी बात है । सरकार की राजभाषा नीति का पालन करना हमारा कर्तव्य एवं संवैधानिक अपेक्षा भी है ।

किसी भी संस्थान की गृह पत्रिका उसका दर्पण होती है । "शेवा कृति" के प्रकाशन का उद्देश्य हिन्दी के प्रचार प्रसार को बढ़ावा देना और अपने सृजनात्मक विचारों को एक मंच प्रदान करना है । इस पत्रिका का प्रकाशन सभी विभागीय अधिकारियों के आपसी सहयोग से संभव हो सका । आशा है कि "शेवा कृति" का दूसरा अंक आपको पसंद आएगा । आपके सुझाव हमारे लिए बहुमूल्य हैं और उनका सदैव स्वागत रहेगा ।

शुभकामनाओं सहित

- विजय ज. मानवटकर

महात्मा गाँधी की 150 वीं जयंती

सुमित कुमार भाटी
निरीक्षक (परीक्षक)

इतिहास मे यदि कोई ऐसा व्यक्ति है जिसने एक राष्ट्र के गुलामी में जकडे व्यक्तियों को विदेशी सरकार के व्दारा किये जा रहे अत्याचारों के विरुध्द एकजुट किया तो वह केवल भारतवर्ष के राष्ट्रपिता मोहनदास करमचन्द्र गाँधी जी ही हैं।

गाँधी जी का जन्म 2 अक्टूबर सन 1869 को गुजरात के एक तटीय शहर पोरबन्दर में हुआ था। उनके पिता राजकोट में दीवान थे तथा उनकी माता पुतलीबाई एक प्रभावी शासन कार्य मे दक्ष महिला थीं।

प्रत्येक वर्ष गाँधी जी के जन्मदिवस 2 अक्टूबर को एक राष्ट्रीय महत्व के साथ बडे ही जश्न के साथ गॉधी जी के दर्शन, आदर्शो, उनके अहिंसा के विचारधारा को जनमानस तक पहुँचाने के लिए मनाया जाता है। गाँधी जी ने जीवन भर जनसेवा तथा अहिंसा के जरिये देश सेवा का कार्य किया।

गाँधी जी का प्रथम नस्लभेद का अनुभव सर चार्ल्स ऑलीवेट के साथ हुआ जो उनके भाई पर लगे आरोपों की जॉच कर रहे थे, जब गाँधी जी ने उन्हें अपनी पुरानी जान पहचान याद दिलाना चाहा तो ऑलीवेंट ने उन्हें यह कहा कि वो औपचारिक रुप से अपने भाई के दस्तावेज जमा करें। इस घटना से गाँधी जी क्रोध में आये परंतु उन्होंने तभी ठाना कि वे दंभी व्यक्ति से नहीं बल्कि उसके दंभ से क्रोध करेंगे। गाँधी जी का दूसरा नस्लभेद का अनुभव दक्षिण अफ्रीका में हुआ जब वे वहाँ प्रथम श्रेणी के डिब्बे से उतार दिये गये। गाँधी जी ने इसके विरुध्द आवाज उठायी तथा दक्षिण अफ्रीका में ही आंदोलन चलाया जो कि सफल रहा।

'सत्याग्रह'

सन 1915 में गाँधी जी कॉग्रेस के नेताओं के कहने से भारत वापस आये और कॉग्रेस पार्टी में शामिल हुए। उस समय देश में गाँधी जी ने अंग्रेजो के बढते अत्याचार के विरुध्द बिना शस्त्र प्रयोग किये अहिंसा और प्रेम के मार्ग पर चलते हुए आजादी, स्वराज प्राप्त करने

के लिए आन्दोलन आरंभ किये। गाँधी जी ने महिला सशक्तिकरण, किसानों के सुधार आदि के लिए भी अनेक कार्य किये।

गाँधी जी के इन्हीं कार्यों और आदर्शों को तथा उनके सत्याग्रह को याद करने तथा देशभर में लिए उनकी दी गयी शिक्षा का वितरण, प्रसार, प्रचार करने के लिए ही हर वर्ष 2 अक्टूबर को उनका जन्म दिवस गाँधी जयंती के रुप में मनाया जाता है।

15 जून 2007 को अन्तर्राष्ट्रीय महासभा ने गाँधी जी के जन्मदिवस को उनके आदर्श तथा सत्य और अहिंसा के मार्ग को सम्मानित करते हुए 'अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' के रुप में प्रत्येक वर्ष मनाये जाने का फैसला किया। अत: प्रत्येक वर्ष 2 अक्टूबर को गाँधी जयन्ती की अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रुप में मनाया जाता है।

गाँधी जी के 150 वीं वर्षगांठ को मनाने के लिए भारत सरकार ने एक राष्ट्रीय समिती तैयार की है जिसके मुख्य सदस्यों में उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सभी राज्यों के मुख्यमंत्री गाँधी विचारधारा के समर्थक विभिन्न क्षेत्रो के व्यक्ति है। इसके अलावा 19 सदस्यों की एक कार्यकारी समिति भी बनायी जोकि 150 वीं गाँधी जयंती पर आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों की रुपरेखा तैयार करेगी।

राजस्थान के मुख्यमंत्री ने तो लगातार एक वर्ष तक गाँधी जयंती के उपलक्ष्य में विभिन्न कार्यक्रमों की करने की घोषणा भी की है।

03 फरवरी 2019 से 22 दिनों तक एक यात्रा निकाली गयी जो कि राष्ट्रपिता के समाधि स्थल राजघाट से आरम्भ होकर अहमदाबाद मे आश्रम, पोरबन्दर, पुणे मे यरवदा जेल, वर्धा, चौरी चौरा, चंम्पारण होते हुए म्यामार के यंगून तक जारी रही जिससे सड़क सुरक्षा और गाँधी जी के स्वच्छता के संदेशों को जनमानस तक पहुँचाया गया।

गाँधी जी की सर्वश्रेष्ठ आन्दोलन 'सत्याग्रह' के बारे में जितना कहा जाये कम है। सत्याग्रह के जरिये, गाँधी जी का ये मानना था, कि अपने शत्रु की अन्तरआत्मा को झकझोरा जा सकता था तथा बिना हिंसा क्रोध या शस्त्र का इस्तेमाल किये बडी से बडी लड़ाई जीती जा सकती है। गाँधी जी की इस शिक्षा को देश भर के नेताओं के अलावा विभिन्न देशों के युवा नेताओं व्दारा आज भी आत्मसात किया जाता है। सत्याग्रह के विषय में गाँधी जी कहते थे कि, वैसे तो ईश्वर के अनेको नाम है पर एक ऐसा नाम है 'सत' अर्थात सत्य, सत्य ही ईश्वर है । गाँधी जी की शिक्षाओं का देश भर में इतना प्रभाव था कि वे आंदोलन शुरु करते थे कुछ लोगो के साथ किन्तु देखते ही देखते पूरा देश उनके बताये मार्ग

साथ चलने के लिए तैयार हो जाता था। उनको महात्मा की उपाधि भी दी गयी और उनको बापू भी कहा गया।

प्रधानमंत्री जी ने कुछ वर्ष पहले गाँधी जी के स्वच्छता के संदेश की आत्मसात करते हुए एक पहल शुरु की 'स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत' इसका शुभारम्भ गाँधी जयन्ती पर ही किया गया था।

देश के सच्चे सेवक, अहिंसा के पुजारी, दीन दुखियों के सहारे गॉधी जी को देश के ही एक नागरिक ने पिस्तौल चलाकर मार दिया था। किन्तु आज भी 71 वर्ष बाद देश में गांधी जी के बताये गये रास्तों पर चलने वालो की और उनके आदर्शो को मानने वालो की कमी नही है।

गाँधी जी के सम्मान में प्रत्येक वर्ष उनके जन्मदिवस को राष्ट्रीय महत्व का घोषित करते हुए राष्ट्रीय पर्व के रुप मे स्कूल, विद्यालय, सरकारी संस्थान आदि को बन्द रखा जाता है। विभिन्न विद्यालयों में नाटक आदि का आयोजन, तथा खादी वस्त्रो की प्रदर्शनी, सरकारी संस्थानों में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं आदि आयोजित की जाती है।

गॉधी जी के सम्मान में तथा उनके व्दारा बताये गये मार्ग पर चलने वालो के लिए जो कि विभिन्न क्षेत्रो मे अस्पृश्यता, हिंसा, भेदभाव, आतंकवाद इत्यादि के विरुध्द कार्य करते है, एक पुरुस्कार 1995 से प्रारम्भ किया गया जिसको गॉधी शान्ति पुरस्कार के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक वर्ष यह पुरुस्कार दिया जाता है।

गाँधी जी व्दारा बताये गये अहिंसा, सत्य, प्रेम, निस्वार्थभाव के रास्तो पर चलने के लिए प्रेरित करने तथा उनकी दी गयी शिक्षाओं को आत्मसात करने तथा जन जन तक पहुचाने के लिये गॉधी जी की 150 वीं जयंती इसी हर्ष और उल्लास के साथ मनायी गयी।

भारतीय डाक विभाग व्दारा गाँधी जी के जीवन के विभिन्न वृत्तों से संबन्धित 7 (सात) वृत्ताकार डाक टिकट जारी किये ! यह गाँधी जी को सम्मान है। प्रत्येक वर्ष उनके समाधि स्थल राजघाट पर देश के विभिन्न राजनेताओ व्दारा उनको श्रध्दांजलि दी जाती है।

अन्त मे गाँधी जी की एक बात याद आती है शारीरिक एवं आत्मिक स्वच्छता हमें ईश्वर के करीब ले जाती है।

जो जीवन सेवा मे व्यतीत होता है वही फलदायी है।

यह ध्यान मे रखते हुए प्रत्येक वर्ष उनकी शिक्षाओं और उनके बताये मार्ग पर आगे बढते हुए हम उन्हें श्रध्दांजलि अर्पित करते रहेंगे।

''यह कोई कहानी नहीं''

सुनील कुमार मल्ल
आयुक्त, सीमाशुल्क

अक्सर उसे अपने भीतर कुछ सुलगता हुआ सा लगता और ऐसे में उसे बार–बार कलम उठाने की जरुरत महसूस होती। वह कोई बडा लेखक नही था और, सच पूछिये तो, उसके लेखक होने की बात शायद ही किसी को ज्ञात थी। उसने कुछ लिखा भी हो तो छपकर दुनियॉ के सामने नही आ पाया था। उसे विषयों की कोई कमीं नहीं थी। गरीबी, भुखमरी, राजनीति, दुर्व्यवस्था किसी विषय पर उसे लगता कोई कहानी अवश्य लिखी जा सकती है। पर उसकी सबसे बडी समस्या थी कि वह अपने भीतर की सुगबुगाहट को इबारत का रुप नहीं दे पाता था। उसे लगता कि कहीं न कहीं से वह अपंग है। वह कुछ लिखना प्रारम्भ करता तो थोडी देर बाद वह पाता कि उसकी लेखनी का आगे चलना असम्भव हो गया है। उसकी कहानी अधूरी रह जाती। ऐसी बहुत सी अर्ध लिखित कहानियॉ थीं उसके पास और उससे भी अधिक अलिखित। उसे अपनी अपंगता पर खीझ होती। अक्सर उसे लगता की वह कभी भी लिख नहीं सकता है। पर उसके भीतर की हलचल का दबाव उसे जब भी महसूस होता उसका हाथ बरबस अपनी लेखनी पर चला जाता।

और कुछ ऐसा ही था आज का दिन। उसने निश्चय कर लिया था कि आज वह एक कहानी अवश्य लिखेगा। उसे लग रहा था कि उसे एक बना बनाया प्लाट मिल गया है। हुआ यों कि जिस रास्ते से वह अपने ऑफिस जाता था उस रास्ते में सडक के किनारे एक भिखारी हमेशा बैठा रहता, बिजली के पोल से टिका हुआ, मानो उसकी नियति को उस खम्भे के साथ बॉध दिया गया हो। (ऐसा भाव एक दिन अचानक वहां से गुजरते हुए उसके मन में आया था और घर जाकर उसने डायरी में नोट कर लिया था) उसे लगता कि यदि वह बिजली का खम्भा वहां पर नही होता तो वह भिखारी शायद ही सीधा बैठ पाता, जैसे वह खम्भा उसकी रीढ़ की हड्डी हो (उसकी डायरी से)। उस भिखारी के लिए अक्सर उसके मन में हमदर्दी का भाव आता और जब भी उसकी जेब आज्ञा देती वह उस भिखारी को दस पांच पैसे जरुर दे देता था। बढ़िया लेखक बनने के लिए दूसरों के दर्द को महसूसना एक

जरुरी शर्त है, उसे लगता, और इस हमदर्दी या दया के सहारे वह अपने लेखक होने के अहसास को जिन्दा रखना चाहता था।

तो हुआ यह कि आज सुबह जब वह ऑफिस जा रहा था उसने खम्भे के चारों ओर एक भीड देखी। निकट जाकर देखा तो पाया कि बूढा भिखारी खम्भे से सटे हुए एक और लुढका हुआ पडा था। लोगों से मालुम पडा कि वो मर चुका था, शायद सर्दी में ठिठुर कर। उसके मन में उस भिखारी के लिए अफसोस और हमदर्दी का एक मिला जुला भाव आया। इस देश में, और देश की कौन कहे, उसके अपने शहर में कितने ही ऐसे लोग है जो आलीशान बंगलों में रहते हैं, गाडियों में घूमते हैं और विदेशी शराब पर पैसा लुटाते हैं और उसी शहर में यह भिखारी भी था जिसका सर एक टिन की छत को भी तरसता रह गया। दुनियॉ की इन विसंगतियों के प्रति उसका मन एक अजीब सी घृणा से भर गया। उसने निश्चय कर लिया कि वह इस विषय पर एक कहानी अवश्य लिखेगा। पर अभी तो उसे ऑफिस जाना है। वह भीड से बाहर निकल आया। उसे उस भीड पर भी गुस्सा आ रहा था। जब तक वह भिखारी जिंदा था लोग उससे कतराकर निकल जाते थे, पर आज वह मरकर सबके आकर्षण का केंद्र बन गया था, मानो इस बहाने लोग मौत को करीब से देखना चाह रहे हों। (कहानी में यह जरुर आना चाहिए)

आज उसका मन ऑफिस में एकदम नही लग रहा था। उसे डर था कि यह प्लाट उसके हाथ से छिटक ना जाय और उससे पहले वह उसे कागज पर उतार देना चाहता था। ऑफिस का समय समाप्त हुआ और वह तेज कदमों से घर की तरफ चल पडा। रास्ते में उसकी निगाह उस बिजली के खम्बे पर पडी। अब वह किसी की रीढ की हड्डी न था। उसके चारों ओर सब कुछ खाली खाली सा लग रहा था। शायद वह भिखारी उस जगह की पहचान बन गया था और उसके बिना उस खम्भे के ईद गिर्द माहौल कुछ अपूर्ण सा लग रहा था।

वह हल्के से मुस्कुराया। उसे लगा कहानी पर उसकी पकड मजबूत होती जा रही है। सारा कथानक उसकी ऑखों के सामने सिनेमा की तस्वीर की तरह से गुजरता हुआ सा लग रहा था। वह घर पहुँचा और तुरंत ही अपनी डायरी निकाली। पर लिखना शुरु ही किया था कि भीतर से उसकी पत्नी की आवाज आई ''अरे हां, बाजार से सब्जी लानी होगी,'' उसे याद आया।

यह तो रोज की बात थी पर वह कहानी लिखने के आवेश में भूल गया था। वह धीरे

से उठा, झोला लिया और बाजार की तरफ चल दिया। कहानी वह लौट कर लिखेगा उसने सोचा। ''सुनो'' वह घर से निकला ही था कि उसकी पत्नी ने फिर आवाज दी।

''आज मकान मालिक आया था''।

उसे याद आया कि मकान का किराया देना है और अभी तनख्वाह मिलने का कोई लक्षण नहीं दिख रहा है। फिर दूधवाला भी तो कल पैसों की मांग करेगा। यह चाय भी अजीब कमबख्त चीज ईजाद की है दुनिया ने हम निम्न मध्यमवर्गीयों की कमर तोडने के लिए।

धीरे–धीरे चलते हुए वह इस बात का तुक ढूंढने लगा कि सभी लोग पहली ही तारीख को पैसों की मांग क्यों करते है। आखिर महीने में और दिन भी तो होते है?

हर पहली तारीख को उसके सामने यही सारे प्रश्न आ खडे होते हैं – वही मकान मालिक, वही दूध वाला, लडकों की फीस, जाने क्या क्या। वही ढेर सारी मुश्किलें।

थोडी देर के लिए कहानी का भूत उसके दिमाग से उतर गया और उसके ईदगिर्द उसकी रोजमर्रा की समस्यों का जाल सा बुन गया। आने वाले कल के ख्याल में उसे लगा उसकी जिन्दगी वहीं ठप पड जायेगी । उसे लगा वह खुद एक पात्र है, अपनी कहानी के पात्र उस भिखारी की तरह। जीवन के लिए संघर्ष करते हुए किसी क्षण वह भी उसी तरह निढाल पड जाएगा जैसे आज सुबह वह भिखारी। और फिर यही समस्याएं उसके अपने बेटों पर आयेंगी वही मकान का किराया, दूध का पैसा, पढाई – लिखाई।

उसे लगा यह सब शाश्वत काल तक चलेगा। शाश्वत काल तक आदमी एक पात्र के रुप में पैदा होता रहेगा कभी क्लर्क तो कभी भिखारी। जिन्दगी का सफर वह इसी तरह घुटनों के बल चलकर तय करता रहेगा और कुछ सौभाग्यशाली अपने फुर्सत के क्षणों में उसे अपनी कहानी का पात्र बनाते रहेंगे। अजीब हास्यास्पद बात है। ऐसे जीवन की सार्थकता क्या पात्र होने में ही है?

अचानक उसने निर्णय किया, इस विषय पर वह कहानी नही लिख सकता। बोझिल कदमों से वह बाजार की तरफ चल पडा।

कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग संबंधी छोटी छोटी बातें

रुपेश एस. सक्सेना
वरिष्ठ अनुवादक

देश की स्वतन्त्रता के उपरांत भारत सरकार द्वारा हिन्दी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिलाने के उपरांत प्रचार प्रसार हेतु अनकों कदम उठाए गए, नीतियां बनीं, पदों का सृजन किया गया, नीतियों का कार्यान्वयन किया गया। राजभाषा अधिनियम 1963 एवं राजभाषा नियम 1976 के लागू किए जाने के उपरांत संघ की राजभाषा नीति का सरकारी काम काज में तेजी से प्रसार हुआ। यद्यपि यह एक कटु सत्य है कि हमारी राजव्यवस्था आज भी अंग्रेजों की बनाई प्रणाली पर ही कार्य कर रही है परंतु सरकारी काम काज में राजभाषा हिन्दी को अंग्रेजी के बराबर लाने की कोशिश की गई और अभी भी की जा रही है। कार्यशालाओं का आयोजन, नियमित प्रशिक्षण, सरकारी एजेंसियों के द्वारा लगातार जारी किए जा रहे निर्देश इस बात का उदाहरण हैं। जहां तक परिणाम का प्रश्न हैं, सरकारी काम काज में हिन्दी की अधिक से अधिक प्रयोग हेतु इन प्रयासों से अधिक कुछ और भी करना होगा जिससे नीति निर्माताओं एवं उनके कार्यान्वयन करने वालों को अधिक बल प्राप्त हो सके।

राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन हेतु नियमों को ध्यान में रखते हुये कई ऐसी छोटी छोटी बाते हैं जिनसे हिन्दी को बढावा दिया जा सकता है और सरकारी कार्यों का निष्पादन भी किया जा सकता है। किसी भी कार्यालय में दो वर्ग स्पष्ट रुप से दृष्टिगोचर होते हैं एक निर्णयकर्ता दूसरे उनको कार्यान्वित करने वाले और इन दोनों की ये जिम्मेदारी है कि वे सभी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग करें। छोटे से लेकर मध्यम श्रेणी के कर्मचारी हों या उच्च पदों में बैठे अधिकारीगण, सभी को इस बात का ध्यान रखना है कि सरकारी काम काज में हिन्दी का प्रयोग बहुत ही आसान है और इसके माध्यम से आप स्वाभाविक एवं स्पष्ट रुप से अपने कार्यों को पूरा कर सकते हैं। नियम की सीमाओं से परे हमें छोटे छोटे कदम उठाने

पड़ेंगे जिनसे राजभाषा कार्यान्वयन के व्यापक परिणाम प्राप्त होंगे। यह बिन्दु सभी सहायकों/अनुभाग प्रमुखों पर लागू होते हैं।

- जैसे ही नई फाईल खोली जाये उसका शीर्षक द्विभाषी रुप में लिखें एवं पहली नोटशीट में बाई ओर भी फाइल का शीर्षक हिन्दी में लिखें।
- अपने अधीन कर्मचारियों एवं अधिकारियों की राजभाषा हिन्दी की क्षमताओं की पहचान कीजिये। यदि किसी अधीन कर्मचारियों एवं अधिकारियों के पास हिन्दी में कार्य करने के अच्छी क्षमता है तो उसको ज्यादा फाइल संबंधी कार्य दें एवं उसके व्दारा किए गए राजभाषा के कार्यों को दूसरे के समक्ष प्रस्तुत करके उनकी हौसला अफजाई करें।
- कार्यालयीन कार्यों को हिन्दी में करते समय अगर आवश्यकता पडे तो अंग्रेजी शब्द को देवनागरी में ही लिख दें।
- प्रपत्रों पर हस्ताक्षर आवश्यक रुप से हिन्दी में करें, इससे दूसरे सहकर्मियों को भी प्रेरणा मिलेगी।
- कम्प्युटर पर हिन्दी टंकण नहीं आने पर यूनिकोड एक्टिव करते हुए उसमें हिन्दी की फोनेटिक टाइपिंग की सुविधा डाउनलोड करलें, जिससे हिन्दी टंकण में किसी भी प्रकार की असुविधा न हो।
- सरकारी कार्यों में सरल एवं सुबोध हिन्दी का प्रयोग करें। यदि एक बार कोई टिप्पणी हिन्दी में लिख दी जाएगी तो आगे का अधिकारी उस पर हिन्दी में ही अभ्युक्ति (Remarks) लिखेगा और इस तरह आगे के अधिकारी तक हिन्दी में कार्य हो जाएगा।
- नेमी प्रवृत्ति (Routine Matter) वाली टिप्पणियों, पत्रों, आदेशों आदि की पहचान करें। चूंकि आपको विषय का ज्ञान है अत: कार्यालय के हिन्दी अनुभाग में उन सभी नेमी सामग्री को दे दिया जाये और सहायक व्दारा हिन्दी अनुभाग से आपसी विचार विमर्श करते हुए इन टिप्पणियों को हिन्दी में बनवा लिया जाये और ड्राफ्ट/कागजात आदि को द्विभाषी रुप में तैयार करवा लिया जाये। बाद में स्वयं उनका उपयोग करके हिन्दी के काम काज को बढावा दिया जाये।

- सभी कर्मियों को अपने अपने अनुभागों में आवक और जावक रजिस्टरों को संभालना चाहिए और उनमें तुलनात्मक रुप से अंग्रेजी के कागजातों के संचरण के साथ साथ हिन्दी के पत्राचार का रेकॉर्ड रखना चाहिये ताकि किसी भी प्रकार की रिपोर्ट त्वरित रुप से तैयार की जा सके। राजभाषा कार्यान्वयन हेतु यह सहायक सिद्ध होगा।
- भारत सरकार के राजभाषा विभाग व्दारा टिप्पण/आलेखन, मूल रुप से अपना कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई हैं। दूसरे सहकर्मियों के मध्य राजभाषा कार्यों हेतु कार्यालय में जारी प्रोत्साहन योजनाओ के बारे में बातचीत करें ताकि वे भी इन योजनाओं में भाग ले सकें।
- राजभाषा संबंधीं सभी गतिविधियों जैसे- कार्यशाला, पखवाड़ा, राजभाषा प्रतियोगिताएं व्याख्यान आदि में सभी कर्मचारी एवं अधिकारीगण भाग लें

इस तरह बिना किसी विशेष तैयारी के आप अपने सरकारी कामकाज में राजभाषा का उपयोग कर सकते है। सरकार तो राजभाषा के प्रचार प्रसार हेतु भरसक प्रयास कर रही है। किन्तु इसके साथ साथ उपर दिये गए सरल सुझावों के माध्यम से कार्यालयीन कार्यों में हम राजभाषा हिन्दी को एक सम्मानजनक स्थिति मे पहुचा सकेंगे।

— रुपेश एस सक्सेना

भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि
आज आप क्या कर रहे हैं
- महात्मा गांधी

चित्रकार

अशोक झा
निरीक्षक (निवारक अधिकारी)

मैं भी हूँ एक चित्रकार
ना कागज़ ना कैनवास
न ब्रूस और न कोई रंग
बनते हैं फिर भी सतरंगी चित्र
जब होता हूँ उन्नीन्दा
चादर की आड़ी-तिरछी लाइनों से
बनाता हूँ अजब-गजब चित्र
जब रहता हूँ अकेला
देखता हूँ घर का मोज़ैक किया फर्श
रंग-बिरंगे पत्थरों से गढ़ता हूँ ढेर सारे चित्र
आसमान में जब आते हैं बादल
डुबते-उतराते बादलों से बनता हूँ नए-नए चित्र
मेरे चित्र सिर्फ मेरे हैं
बनाती हैं मेरी नज़रे
जिन्हें देखती है मन की आँख
मेरे मन की तरह ही मेरे चित्र हैं
कभी उदासी लिए कभी हताशा भरी
कभी आशा कभी उम्मीद से सजी
कभी फर्श की पत्थरों में दीखता है
खिलखिलाता-मुस्कराता बच्चा
बिस्तर की आड़ी-तिरछी लाइनों में
दिख जाती है प्रेयसी
बादलों में दीखते अक्सर
कभी देव कभी दानव
कभी हाथी कभी घोड़ा
कभी पेड़ कभी पौधा
कभी दीखता है चौराहे पर खड़ा लंगड़ा भिखाड़ी
कभी दिख जाती थोड़ी सी अलग वह बच्ची
जिसे रोज़ स्कूल के बस में देखता हूँ

जब अपने बेटे को स्कूल छोड़ता हूँ
जो बोल नहीं पाती है
मुझे देख रोज मुस्कराती है
शायद स्नेह की भाषा जान जाती है
कभी इन चित्रों में दिख जाता है
वह बहुत ही बूढ़ा ऑटोवाला
जिसके नहीं है अब दाँत
फिचकी है जिसकी मुँह
झुड़ियां पड़ गई है चेहरे पर
डर लगा था उसके ऑटो में
जब वह बार-बार आईने में
देखता था पीछे के दृश्य
शायद उसकी आँखें भी कमजोड़ हो गई थी
पर परिवार की थी फिक्र
तभी तो चलाता था इस उम्र में भी ऑटो
बिल्कुल उस खोमचे वाले की तरह
जो अहले सुबह उठ जाता है
तैयार होता है
काम पे निकल जाता है
ट्रेन के धक्के में खुद को
और सामान को बचाता है
दिन भर घूम-घूमकर बेचता है
फिर थक कर लौट आता है
थोड़ा सा खाता है
फिर मुस्कराता है
गिनता है पैसा
अलग रखता है कुछ पैसा
चटाई पे लेट जाता है
देखता है सपना
बेटी के ब्याह का
बेटे के पढ़ाई का
इन चित्रों में कभी वह पांडे भी तो दिख जाता है
समय से पहले ही जो बूढ़ा सा हो गया था
सोचा था होगा पचास-पचपन का
ठगा सा रह गया था
जब उसने बताया था बयालिस
मुझसे केवल दो साल ही बड़ा था
अपनी ढ़लती उम्र का एहसास
मुझे पहली बार हुआ था
थोड़ा सा झिझका था
थोड़ा सा हिचका था
अजीब सा मुझे तब लगा था
वह थोड़ा सा मुस्कराया
फिर जोड़ से हँस पड़ा था
कहने लगा फिर वह
कभी मैंने भी देखे थे रंगीन सपने
बनाए थे सतरंगी चित्र
पर सपने कहाँ सच होते हैं
सामने होती है जीवन की सच्चाई
खुद से होती है खुद की लड़ाई
यथार्थ जीत जाता है
स्वप्न हार जाता है
सतरंगी चित्र अब डरावना लगता है
जाने क्या-क्या वह बड़बड़ाता रहा
मैं सुनता रहा वह सुनाता रहा
मेरी खामोश नज़रें शुन्य में देखती रही
अचानक जैसे ही मेरी तन्द्रा टूटी
मैंने फिर से उसकी आवाज़ सुनी
साहब परिवार से दूर होकर भी
हम परिवार को बचाने में लगे हैं
कभी आधा पेट तो कभी भूखे पेट
करते हैं मेहनत कमाते हैं पैसा
ताकि हो सके मुन्ने की पढाई
आ सके पिताजी की दवाई
पर बिटिया की शादी की है चिंता
तभी तो कंधे झुकने लगे हैं
बयालिस की उम्र में बूढ़े होने लगे हैं
पांडे की बातों ने मन को झकझोड़ दिया था
मेरा मन फिर से नया चित्र बनाने लगा था
चित्र उनका जो परिवार संस्था को बचाते हैं
बिना शिकन अपने मूल्यों को बचाते हैं
इन चित्रों में वह ऑटोवाला, खोमचवाला
और दूर तीस माला बिल्डिंग को रंगते हुए
बाँस की बल्लियों पड़ खड़ा मज़दूर
बहुत ऊपर नज़र आते हैं
ऐसा लगता है बिल्डिंग को रंगते हुए
बना रहा है वह भी कोई चित्र
शायद अपने परिवार का कोई सुनहरा चित्र
मेरी पलकें बोझिल होने लगती है
दूर कहीं खो जाता हूँ
खुद को पुकारता हूँ
मन को तलाशता हूँ
और फिर से नए चित्र बनाता हूँ
फिर से नए चित्र बनाता हूँ।

— अशोक झा

भ्रष्टाचार मिटाओ-नया भारत बनाओ

जीतेन्द्र कुमार
निरीक्षक (निवारक अधिकारी)

भ्रष्टाचार एक सामाजिक, नैतिक एवं राजनीतिक बुराई है, जिसमें कुछ खास वर्ग के लोगों या व्यक्तियों का लाभ पहुँचाने के लिए अनुचित एवं गलत तरीके से अपने पद या संसाधनों का उपयोग किया जाता है आज इस भ्रष्टाचार की समस्या ने एक बीमारी का रूप ले लिया है जो दिन-ब-दिन हमारे भारतवर्ष को इसके पूर्ण विकास में बाधा पहुँचा रहा है। हालाँकि इसके उन्मूलन के लिए कई सस्थाएं बनाई गयी है पर फिर भी हम पूर्ण रूप से इसे जड़ से मिटाने में सफल नहीं हो पाये हैं।

भ्रष्टाचार की समस्या के कई रूप हैं, जैसे- घूसखोरी, भाई-भतीजावाद, अनैतिक रूप से किसी का समर्थन करना, वंशवाद, मिलावट आदि। आज भ्रष्टाचार की समस्या हमारे रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा तक बन चुका है। ऐसे तो कभी-कभी भ्रष्टाचार के कारण कुछ लोगों को फायदा होता है, पर अगर हम व्यक्तिगत सोचें बल्कि पूरे देश का सोचें तो आज भी हमारा देश विकासशील देशों के ही श्रेणी में आता है। साथ ही ट्राँसपरैंसी इंटरनेशनल की सूची की भी माने तो जिन देशों में भ्रष्टाचार कम या न के बराबर है वे काफी विकसित है।

भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए हमारी सरकार ने कुछ सस्थाएं बनायी हैं वे काफी सक्रिय हैं, जैसे- केन्द्रीय सतर्कता आयोग(सीवीसी), केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो(सीबीआई), केन्द्रीय लेखा परीक्षा(कैग) इन संस्थाओं ने बड़े स्तर के भ्रष्टाचार को रोका है, साथ ही कई ऐसे

कानून भी बनाये गये हैं जिनसे लोग भी भ्रष्टाचार रहित माहौल में जी सकें। सूचना का अधिकार 2005 आदि इसके साथ ही आजकल हम मोबाइल, मीडिया एवं कई अन्य स्रोत का सहारा ले कर भ्रष्ट नीतियो को तुरंत उपयुक्त संस्थाओं को सूचित कर सकते हैं। इसके अलावा सरकारी एवं कारपोरेट तंत्र को भ्रष्टाचार रहित करने के कुछ अन्य उपाय भी हैं, जिनको इस प्रकार लागू किय जा सकता है। ये हैं-

<u>व्यक्तिगत प्रयास–</u> प्रत्येक नागरिक को चाहिए कि वह भ्रष्ट नीतियों के प्रति अपनी आवाज उठायें। न किसी को भ्रष्टाचार करने दें न ही करें। हमारा यहा मंत्र होना चाहिए "न भ्रष्टाचार करेगें हम और न ही करने देगें हम"।

<u>सीसीटीवी कैमरा</u>- हमें प्रत्येक सरकारी संस्थान में कैमरे लगवाने चाहिए ताकि, सरकारी कर्मचारियों का व्यवहार एवं काम को सही तरीके से संचालित किया जा सके। जैसे ही कोई घटना सामने आये उस पर तुरंत कार्यवाई की जा सके।

<u>आधार कार्ड समावेशन–</u> हम आधार कार्ड के समावेशन के द्वारा कई सरकारी एवं अन्य कार्यों का जायजा ले सकते हैं बैकिंग/ कार्पोरेट सेक्टर/सरकारी तंत्र के कई नाजायज कामों का पर्दाफाश इससे हुआ है। लोगों की भ्रष्ट नीतियों, अधार कार्ड के सभी क्षेत्रों में समावेशन से दूर होगी। इसके साथ ही गरीब लोगों तक सरकार की सभी योजनाएं आसानी से पहुँच पायेंगी।

<u>ऑनलाइन ट्रांजेक्शन को बढ़ावा देना</u>- हमारी सरकार को इस योजना से काफी जोर-शोर से कायो करना चाहिए। यह एक ऐसा तुरुप का पत्ता है, जो सभी काले कामों को सभी के सामने ला देगा। इसके लिए लोगों को प्रशिक्षण देना उनके लिए उचित जानकारी देना आवश्यक है। बल्कि एक बार यह पूर्ण रूप से लागू हो गया तो भ्रष्टाचार की 90% समस्या अपने आप ही खत्म हो जाएगी।

<u>तकनीकी को प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार सुनिश्चित करना</u>- इससे लोगों को काम में भी सुविधा होगी और गति भी तेज होगी। मोबाइल, कम्प्यूटर, मीडिया, कैमरा आदि की इस दुनिया में लोग आसानी से किसी भी भ्रष्ट काम को सूचित कर उसका उन्मूलन करने में आसानी

होगी। बस इस काम के तहत जैसे ही कही पे की भ्रष्टाचार की सूचना हो तुरंत इसे उपयुक्त एजेंसी तक पहुँचाए।

<u>भ्रष्टाचार उन्मूलन विभागों को ज्यादा सशक्त बनाना–</u> इन उन्मूलन संस्थाओं में सीबीआई, सीवीसी, आईबी, पुलिस एवं एनजीओ आ सकते हैं। आज के माहौल में राजनीतिक पार्टियों अपनी कुर्सी के लिए अपने पद का दुरुपयोग करती हैं। और किसी भी ने अधिकारी को स्थानांतरित कर देती हैं। इसे रोकने के लिए इन पार्टियों का उचित ब्यौरा किया जाए एवं किसी भी व्यक्ति को इन पार्टियों से शामिल नहीं किया जाए।

<u>न्यायपालिका को दुरुस्त करना</u>- न्यायपालिका के पास आज हजारों भ्रष्ट नेताओं/अफसरों के केस हैं जिनका निवारण तेज गति से होना आवश्यक है। इसके लिए कई कोर्ट बनाये जाए, स्पीडी ट्रायल किया जाए। और किसी भी भ्रष्टाचार में लिप्त व्यक्ति को उचित दंड दिया जाए।

<u>नैतिक शिक्षा का स्कूल एवं कॉलेज एजुकेशन में समावेश–</u> स्कूल वं कालेज के स्तर पर बिना वर्कशाप (नैतिक मूल्यों पर) के लोगों को सर्टीफिकेट नहीं देना चाहिए। उनको इन कार्यों में सम्मिलित होने का प्रावधान किया जाना चाहिए। इससे लोगों को पहले से ही अपने कार्यों के प्रति जागरुक रहना सुनिश्चित किया जा सकता है।

उपर्युक्त बिन्दुओं पर काम कर हम काफी हद तक भ्रष्टाचार का उन्मूलन कर पायेंगे। भारत न केवल संस्थाओं से बना है, बल्कि इसका मुख्य तत्व यहाँ के लोग हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति एक साथ हो के भ्रष्टाचार के प्रति अपनी लड़ाई चालू करे तो वो दिन दूर नही कि हम अमेरिका एवं यूरोप जैसे विकसित देशों को भी पछाड़ देगें। पूरे विश्व में फिर से रामराज्य होगा। हमारा देश विश्वगुरु है। ऐसे में हम ही भ्रष्ट रहे ये तो यह अशोभनीय भी। हमें एक बार फिर से सोने की चिड़िया कहलाने का गर्व मिल सकता है, बस हम इस भ्रष्टाचार नाम के शैतान का खात्मा कर दें।

इस प्रकार हम इस कथन को अपना जीवन का मंत्र बना लें। न करेगें हम भ्रष्टाचार और न सहेंगे भ्रष्टाचार, ये देश हमारा है, हम इसके भाग्य का निर्माण खुद करेगें। इस नीति के तहत रामराज्य का सपना एक बार फिर से पूरा होगा। सबको सम्पन्नता समृद्धि एवं जीवन जीने का उचित अवसर मिलेगा कोई भी दुखी नहीं रहेगा। स्वर्ग धरती पर ही उतर कर आएगा।

दस्तक

..... एक कविता

रोज़ देती वह सपने में दस्तक
आहिस्ता से उठता हूँ
मन का द्वार खोलता हूँ
वह धीरे से आती है
मुझे गले लगाती है
रहती है सारी रात
करती है ढ़ेर सारी बात
फिर मुझे सुलाती है
और जाने कहाँ चली जाती है ॥

शुरु-शुरु में लगता था डर
जैसे गणित की हो वह मेरी शिक्षक
धीरे-धीरे उसे समझने लगा हूँ
बीतते वक्त के साथ करीब आने लगा हूँ
खुद में भी अब फ़र्क महसूस करने लगा हूँ॥

बेसब्री से करता हूँ उसका इंतज़ार
सुनते ही दस्तक
झट से खोलता हूँ द्वार
फिर करते है ढेर सारी बात
लेती है वह दिन भर का हिसाब
किसको दिया धोखा
किससे किया प्यार
क्यों किया आज भी गुस्सा
कैसे आया अहंकार
बातों ही बातों में सब जान जाती है
मुझे समझाती है फिर चली जाती है ॥

उसकी जादुई बातों से
बन गया हूँ आदिकाल का अबोध बालक
जब शायद इंसान केवल इंसान था
नही थी कोई जाति और ना था कोई धर्म
ना था कोई दलित और ना ही था कोई सवर्ण ॥

रोज पड़ती सपने की वह दस्तक
खोलने लगी है मन की गाँठ
टूटने लगी है जंजीरें
आने लगे हैं स्वतन्त्र विचार
होने लगा है मानवता से प्यार
नही कर पाता अब किसी से घृणा
राग-द्वेश सब हो गई है फना ॥

कभी-कभी साथ जाने की करता हूँ जिद
वह मुस्कराती है फिर हँस पड़ती है
वक्त आने दो फिर ले जाउंगी
ऐसा कहती है फिर चली जाती है
नही बोल पाता मैं कुछ
बस अपलक देखता रह जाता हूँ॥

एक दिन वह चुपके से आएगी
नहीं देगी कोई दस्तक
अपनी आगोश में लेकर दूर चली जाएगी
मौत ऐसे ही तो आती है
दूर लेकर चली जाती है ॥

अशोक झा
निरीक्षक (निवारक अधिकारी)

- गजल -

तेरी इक खबर का तलबगार हूँ
इंतेज़ार में हूँ कोरा अख़बार हूँ

तन्हाइयों के माईने न पूछ मुझसे तू
आईने के बरक्स मैं ख़ुद का यार हूँ

तेरे इक़रार इनकार से क्या लेना मुझे
तेरे इश्क़ में हूँ आदत से लाचार हूँ

बिन मोल बिकूं मैं ही खरीदार हूँ
शहर में ऐसा अकेला ही बाज़ार हूँ

तुम गिना चुके शिकवे तो चले जाओ
क़ीमती मगर बेभाव का कारोबार हूँ

धीर का क्या चल देगा कभी भी कहीं भी
मैं बादल हूँ सूखों की बारिश का आसार हूँ

- मनमोहन धीर

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क, न्हावा शेवा से संबन्धित महत्त्वपूर्ण वित्तीय जानकारियाँ (वर्ष 2018- 2019)

- रिपोर्ट

मुंबई सीमाशुल्क अंचल-II राजस्व संग्रह के मामले में देश का सबसे बडा सीमाशुल्क जवारलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा राष्ट्रीय सीमा शुल्क राजस्व में लगभग 22% योगदान देते है। कटेनरीकृत कार्गो (कुल मात्रा का 54%) के निपटान की दृष्टि में भी देश का सबसे बड़ा सीमा शुल्क भवन भी है।

संवर्ग पुनर्गठन के परिणामस्वरुप मुंबई सीमाशुल्क अंचल-II को छह (60) कार्यकारी आयुक्तों में पुनर्गठित किया गया है जिसमें न्हावा शेवा-I से न्हावा शेवा-V शामिल हैं जो मौजूद 36 सीएफएस को पांच समूहों में वर्गीकृत करके बनाया गया है और एक एकिकृत आयुक्तालय कहा जाता है जिसे न्हावा शेवा (जनरल) कहा जाता है। जो अंचल के समय समग्र प्रशासन की देखभाल करता है। इस अंचल में, उपरोक्त के अलावा दो अपील आयुक्तालय भी कार्यरत है।

बेसिक कस्टम ड्यूटी (बीसीडी) का आबंटन

सीमाशुल्क राजस्व लक्ष्य 2018-2019 (बीसीडी)		% वार वितरण
जेएनसीएच लक्ष्य	Rs. 25,000 Crores	22.22 %
शेष भारत	Rs. 87,000 Crores	77.78 %
अखिल भारतीय सीमाशुल्क लक्ष्य	Rs. 1,12,500 Crores	100 %

पिछले वर्षों में राजस्व संग्रहण

अनु. सं	वर्ष	लक्ष्य रुपये करोड़ में	वास्तविक राजस्व वसूली (नेट) रुपये करोड़ में	पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धि का %
1.	2009-10	22250	18222.19	-13.27
2.	2010-11	27625	27976.75	53.53
3.	2011-12	34965	30403.62	8.67
4.	2012-13	36600	37139.04	22.15
5.	2013-14	40000	40224.75	8.25
6.	2014-15	42500	42633.80	5.99
7.	2015-16	46400	46087.51	8.03
8.	2016-17	48000	48764.09	5.79
9.	2017-18	52500	70979.14	45.56
10	**2018-19**	*97587	93357.41	**31.53**

*Rs 25000 Cr (Net) towards BCD and Rs. 72,587 Cr (Gross) towards IGST & Comp. Cess

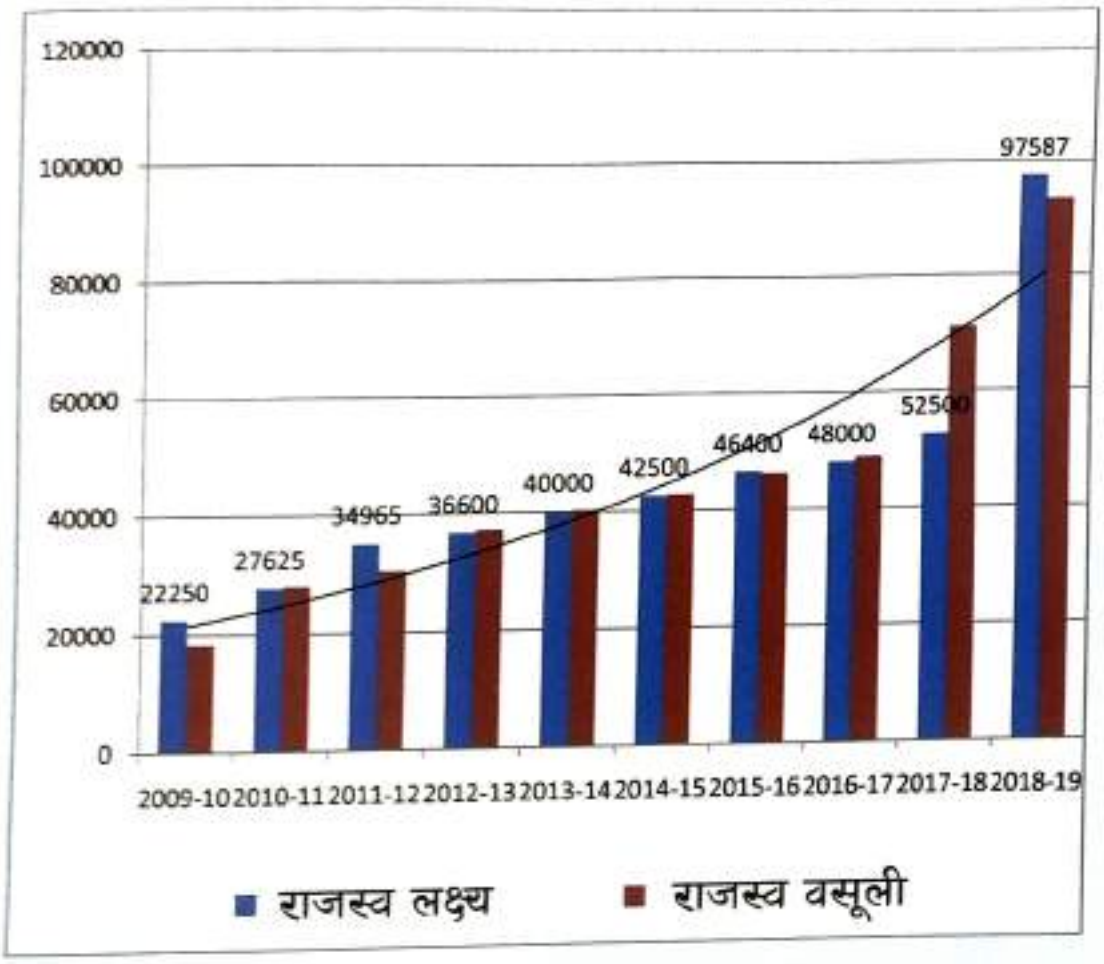

डी.पी.डी. सुविधा

* जवाहरलाल नेहरू पोर्ट पर आयात कंटेनरों की सीधे बंदरगाह डिलीवरी वर्ष 2008 में ए.सी.पी. का दर्जा पाने वाले प्रतिष्ठित आयातकों को और चयनात्मक आधार पर 100% निर्यातोन्मुखी इकाई (ई.ओ.यू.) को लागू किया गया था और आयातकों को 300 टीईयू की न्यूनतम मात्रा / प्रति माह की शर्तों के अधीन थे ।

* मार्च 2016 में उक्त शर्त में ढील देने के बाद मार्च 2016 के महीने के दौरान पोर्ट द्वारा कुल 5803 टीईयू को डीपीडी डिलीवरी दी गई और 13 आयातकों ने सुविधा का लाभ उठाया।

* जे.एन.पी.टी. में कुल TEU का लगभग 40% हिस्सा इयूटी और वॉल्यूम के संदर्भ में सीमाशुल्क हाउस के शीर्ष आयातकों को डायरेक्ट पोर्ट डिलीवरी की सुविधा का लाभ उठाने की अनुमति दी गई है। डी.पी.डी. को बढ़ावा देने के लिए जे.एन.सी.एच. द्वारा निम्नलिखित उपाय किए गए हैं:

क. समर्पित डी.पी.डी. सेल का निर्माण

ख. आर.एम.एस. सुविधा केंद्र (24x7) शुरू करना

ग. जे.एन.सी.एच. में डी.पी.डी. क्लाइंट का पोर्ट रजिस्ट्रेशन

घ. पी.टी.एफ़.सी. की बैठक में डी.पी.डी. का मुद्दा उठा

इ. डॉक्स / समूह के माध्यम से आयात की सलाह देना

च. पोर्ट पर (24x7) निकासी की अनुमति

फ़रवरी, 2019 तक प्रदान की गई डीपीडी अनुमति	मार्च, 2019 तक प्रदान की गई डीपीडी अनुमति	प्रक्रियाधीन डीपीडी अनुमति आवेदन
4198	39*	—

*दिनांक 31.03.2019 तक कुल 4237 डीपीडी रजिस्ट्रेशन हुए ।

डीपीडी आँकड़े (2018-19)

अनु. सं.	माह	टीईयू की संख्या
1.	अप्रैल	56112
2.	मई	58357
3.	जून	54072
4.	जुलाई	60603
5.	अगस्त	60924
6	सितंबर	66593
7.	अक्तूबर	67117
8	नवंबर	63702
9.	दिसंबर	62703
10.	जनवरी 2019	66757
11.	फरवरी 2019	64259
12.	मार्च 2019	74640

वसुल की गई बकाया राशि (श्रेणीवार विवरण), मार्च 2019 तक

(रुपये करोड़ में)

आयुक्तालय	प्री डिपो सिट	लाइव कंसाइ नमेंट का अधोनि र्णयन	कनफ र्म्ड डिमांड से वसूली	वसूली योग्य बका या	बका येदा रों से वसू ली	अनं तिम मू ल्यां कन का अंति म रूप	डी.ई.ई. सी. द्वारा वसूली	ई.पी. सी.जी. द्वारा वसूली	लेखापरीक्षा (पी.सी.ए.) द्वारा वसूली
एनएस I	8.12	3.29	44.43	14.94					
एनएस II		4.16	2.24	1.04	4.25	2.50			
एनएस V		4.67	46.28	5.73					
सी.आर.सी. सी.					0.42				
एनएस IV लेखापरीक्षा)									43.5
एनएस II		9.35	1.67		1.27		48.27	88.03	
कुल	**8.12**	**21.47**	**94.62**	**21.71**	**5.94**	**2.50**	**48.27**	**88.03**	**43.5**

दिनांक **31 मार्च, 2019** तक की गई कुल वसूली = रु. **334.16** **करोड़**

मौन सबसे सशक्त भाषण है।
धीरे-धीरे दुनिया आपको सुनेगी
- महात्मा गांधी

2017-18 और 2017-19 के महत्वपूर्ण आँकड़ों की तुलना

(रुपये करोड़ में)

क्र. सं.	मापदण्ड	मार्च 2018 तक	मार्च 2019 तक	वृद्धि/ कमी %
1.	सकल राजस्व	76127.79	97711.79	28.35
2.	नेट राजस्व	70979.14	93357.41	31.53
3.	ड्रॉबैक निकास	3491.35	3815.85	9.29
4.	रिफ़ंड निकास	1657.30	538.53	-67.51
5	आईजीएसटी रिफ़ंड संवितरण	NA	14186.55	-
6.	टीईयू की कुल संख्या	4830645	5133308	6.27
7.	स्कैन किए गए कंटेनरों की संख्या	199138	207453	4.18
8.	फाइल किए गए बिल ऑफ एंटी की संख्या	872166	897674	2.92
9.	फाइल किए गए शिपिंग / बिलों की संख्या	1258500	1341278	6.58
10.	आयातित वस्तुओं का मूल्यांकन मूल्य	355197.70	416443.21	17.24
11.	शुल्क देय माल के मूल्य	306055.1	368934.31	20.55
12.	शुल्क मुक्त माल का मूल्य	47385.07	43791.41	-7.58
13.	अधिसूचना के अनुसार छोड़ा गया राजस्व	22319.43	28861.08	29.31
14.	योजना के अनुसार छोड़ा गया राजस्व	14591.4	18526.45	26.97
15.	डीपीडी कंटेनरों की संख्या	550737	755849	37.24

स्वतंत्र भारत की उपलब्धियाँ

- लेख

अशोक झा
निरीक्षक (निवारक अधिकारी)

15 अगस्त 1947 ई. को भारत सदियों की गुलामी के बाद आजाद हुआ था। एक तरफ अपने अहिंसक आंदोलन के बल पर स्वतंत्र भारत की परिकल्पना सत्य हो रही थी और जो समस्त विश्व के लिए एक अनोखी घटना से कम न था दूसरी तरफ आंतरिक अतर्विरोध ने देश का विभाजन कर दिया था। विभाजन के कारण हजारों लोग मारे गए थे और लाखों बेघर हो चुके थे। ऐसी परिस्थिति में क्या भारत एक राष्ट्र के रूप में सफल हो सकेगा ऐसी आशंका भी थी। कालान्तर में यह सिद्ध हुआ कि भारत न सिर्फ एक राष्ट्र के रूप में उदित हुआ वरन आज वह सत्तर साल बाद एक महाशक्ति बन चुका है।

स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि एक गणतंत्र देश के रूप में सफल होना है। देश का हर नागरिक बिना किसी भेद-भाव के एक समान है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। भारत का संविधान भारत को एक बहुलतावादी, धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बनाने में कामयाब हुआ है। मतदान के द्वारा सरकारें बनती और बिगड़ती रही। मतदान प्रक्रिया में भारतीय फौज की कोई भूमिका नहीं है यह किसी उपलब्धि से कम तो नहीं।

भारत ने जीवन के हर आयाम को विकसित किया है। 125 करोड़ आबादी के बाद भी भारत ने खाद्य सुरक्षा को प्राप्त किया है। समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति को भी खाद्य-सुरक्षा मुहैया करवाया गया है और उसे भोजन का अधिकार दिया गया है। भारत ने गरीबी-उन्मूलन के क्षेत्र में बड़ी सफलता प्राप्त की है। मानव विकास सूचकांक में भारत ने काफी

सफलता प्राप्त की है। साक्षरता वृद्धि दर प्रभावशाली रही है। शिशु मृत्यु दर में काफी कमी आई है। भारत लाखों बच्चों को कुपोषण से निकालने में कामयाब हुआ है। मिड डे मिल (Mid day Meal) ने कक्षा में उपस्थिति बढ़ाया है। इसने एक ओर जहाँ कुपोषण को कम किया है वहीं दूसरी ओर बाल-मजदूरी, बाल अपराध इत्यादि को कम किया है। अधिकार आधारित लोक कल्याणकारी कार्यक्रमों ने समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास को पहुँचाया है।

भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुकी है। देश के आधारिक संरचना में अभूतपूर्व विकास हुआ है। सड़क, रेल, वायुयान तथा नौवहन का अत्यधिक विकास हुआ है। छोटे शहर वायुयान से उड़ान योजना द्वारा जुड़ रहे हैं वहीं रेल क्षेत्र में बुलेट ट्रेन को लाया जा रहा है। मेंट्रो रेल ने शहरी आबादी को ट्रांसपोर्ट क्षेत्र में सुगम और आरामदायक विकल्प दिया है। राष्ट्रीय आवास नीति ने आवास के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया है। चिकित्सा क्षेत्र में आयुष्मान भारत के आरंभ से गरीबों का कायाकल्प होना निश्चित है। भारत ने ISRO के माध्यम से स्पेस क्षेत्र में अपना अलग मुकाम स्थापित किया है। भारत एक मैनुफैक्चरिंग हब के रूप में उभरा है। तमाम तरह के स्टार्ट-अप कंपनियों की स्थापना की जा रही है। स्टार्ट-अप इंडिया में युवाओं की भागीदारी को सारी दुनिया ने सराहा और महसूस किया है। भारत सरकार की नीति जहाँ एक ओर भारत को मैनुफैक्चरिंग हब बनाकर रोजगार का सृजन करना है वहीं निर्यात के माध्यम से देश का सकल विकास करना भी है। इसी क्रम में डिजीटल इंडिया ने नया कीर्तिमान स्थापित किया है और आज देश के सुदूर इलाके में भी इंटरनेट और स्मार्ट फोन उपलब्ध है। वास्तव में संचार क्रांति ने देश को और ज्यादा एकीकृत किया है।

भारत ने विनिर्माण क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। जहाजरानी क्षेत्र में नए -नए बंदरगाहों को आधुनिक बनाया गया है। आयात-निर्यात के नियमों को सरल बनाया गया है डायरेक्ट पोर्ट डिलीवरी किसी उपलब्धि से कम नहीं यह आयात-निर्यात के क्षेत्र का मील का पत्थर साबित होगा।

भारत ने कला और संस्कृति के क्षेत्र में महान उपलब्धियाँ हासिल की हैं। साहित्य , चित्रकला, लोक-कला निखर कर सामने आर रही हैं। भारतीय सिनेमा नया कीर्तिमान हासिल कर रहे हैं। सबसे ज्यादा फिल्में भारत में बनतीं हैं और इसके दर्शक पूरे विश्व में फैले हुए हैं. खेल-कूद के क्षेत्र में भी भारत ने अच्छी प्रगति की है। इस बार एशियाड में भारत का प्रदर्शन बहुत अच्छा रहा है।

भारत की उपलब्धियाँ अनगिनत हैं। इसे समेटना सहज नहीं , परंतु भारत की सबसे महान उपलब्धि अपनी विविधता के बावजूद एक राष्ट्र के रूप में सफल होना है।

एक तरफ यह विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र साबित हुआ है। तथा अपने लोक कल्याणकारी नीतियों से बहुत कम अवधि में विकसित राष्ट्र बनने की ओर कदम बढ़ाया है। अपनी संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखा है तथा दूसरी तरफ नए विचार नए व्यवहार को भी उदारता से अपनाया है। भारत का एक सफल, सुदृढ़ गणतंत्र के रूप में उभरना इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

'अहिंसा' मानवता के लिए सबसे बडी ताकत है। यह आदमी व्दारा तैयार विनाश के ताकतवर हथियार से अधिक शक्तिशाली है

- महात्मा गांधी

भारत में पीढ़ी अंतराल की समस्या

मयंक कालेरामना
(निवारक अधिकारी)

नई खोज, शोध और सोच किसी भी समाज के आगे बढ़ने की निशानी होती है, परंतु उस नवीनीकरण को कौन कितना अपनाता है और कौन कितना नकारता है, उसी से शुरू होता है एक खिंचावा और यकीनन ये खिंचाव-अलगाव चिर काल से चलते आ रहे पीढ़ी-अंतराल जिसे जेनरेशन गैप, भी कहा जा सकता है, में देखा जा सकता है। कहते हैं कि जुड़वाँ भी एक सोच नहीं रखते। और जहाँ सोच अलग वहाँ विरोध उत्पन्न और जहाँ विरोध उत्पन्न वहाँ समस्या का सृजन।

समस्या का कारण–

वक्त बदलता है, विज्ञान बढ़ता है, सामाजिक समीकरण बदलते हैं, सास्कृतिक परंपराएँ बदलती है और इन बदलते हालातों से किन्ही भी दो विभिन्न जीवनकाल में मानव का विकास विभिन्न तौर पर होगा। उदाहरण के तौर पर आज एक पिता जो दफ्तर जाता है वो आज के जमाने की उन्नति का उतना लाभ नहीं उठा पाता जितना कि शायद उसका स्कूल जाने वाला बेटा, शायद एक उम्र के बाद जिम्मेदारियों से पैदा मश्रूफियत और वक्त की किल्लत मनुष्य को नई और बदलती दुनिया से कदमताल नहीं करने देती।

समस्या के प्रमाण–

ज्यादा पीछे ना जाते हुए आज ही के एक उदाहरण को लेते हैं। आज कि युवा पीढ़ी "विश्व-नागरिक" होने में विश्वास रखती है। गरमजोशी और क्रांतिकारिता युवाओं की पहचान होती है। इसी के चलते आज की युवापीढ़ी अपने आप को समाज की कुरीतियाँ जैसे धर्म और जात की राजनीति, झूठा प्रांतवाद, लिंग-भेद समलैंगिकता के अधिकारों का हनन, इत्यादि से अपने आप को जुड़ा हुआ नहीं मानती और इसी वजह से युवाओं का रुझान उन पश्चिमी देशों की और रहता है जहाँ ये समस्याएँ नहीं है।

यहीँ दूसरी ओर इसी युवा पीढ़ी के माता-पिता की पीढ़ी इन्ही सामाजिक समस्याओं के मध्य में जी कर ही अपने आप को समाज का हिस्सा मानते हैं।

अन्य विषय जिन पर दो भिन्न पीढ़ियों की सोच में निरंतर टकराव देखने को मिलता है-

व्यवसाय का चयन अर्थात पारंपरिक तौर पर चलते आ रहे व्यवसायों की छोड़ कर कुछ नया करने की जद्दोजहद और तनाव चाहे वो पारिवारिक रीतियों से अलग हटना हो चाहे पूरे समाज के खिलाफ। इतिहास के पन्नों में हमेशा युवापीढ़ी की गरमजोशी ही बदलाव लाती दिखाई देती है। परंतु ये भी सही हो हर बार वो मान्य नही। समलैंगिकता पर सोच में अंतर। खान-पान में, आदतों में अंतर। युवा का नए विज्ञान पर भरोसा और बुजुर्गों का अच्छी आदतों पर ये बहस तो शायद राम से भी पुरानी है।

<u>समस्या का निदान–</u>

ये समस्या माना प्राचीन काल से चलती आई और माना आगे भी चलेगी परंतु दो पीढ़ियों में परस्पर सामंजस्य बैठाना नामुमकिन नहीं। गौतम बुद्ध ने भी मध्य मार्ग का जिक्र करते हुए कहा था कि कोई भी समस्या चरम सीमा पर बैठ कर हल नहीं होती। ना युवा सौ फीसद सही ना बुजुर्ग सौ फीसद सही। सामंजस्य लाने के लिए जितना बुजुर्ग एक युवा से ठहराव की अपेक्षा करते हैं उतना ही उन्हें बदलाव को अपनाना सीखना होगा।

समझना होगा एक बुजुर्ग को जैसे ठहरा पानी भी बदबू मारता है और बीमारियों का घर बनता है, वैसे ही उन ठहरी परंपराओं और रीतियों को बदलना होगा। उधर युवापीढ़ी को भी समझना होगा कि हमारे समाज की नींव है जो विश्व में सबसे पुरानी सभ्यता होने के बावजूद भी आज तक कायम है से ठुकराया ना जाए। अंत में एक शेर जो इस बखूबी बया करता है कि

'चमन में इखितलाते-रंगों-बू से बात बनती है,
तुम ही तुम हो तो क्या तुम हो, हम ही हम हैं तो क्या हम है।'

मनोहर धीर
वरिष्ठ सहायक

नई सुबह दफ्तर की ......

(एक वर्ष पूर्व के लेखन से)

सुहानी सुबह थी और हाइवे पर टैक्सी तेजी से दौड रही थी जैसे आज सबको पीछे छोड देगी। मैं अकेला ही जल्दी में नही था, पुरा शहर जैसे किसी मैराथान में था। लोग दौड रहे थे, बहुत से जाने पहचाने चेहरे, आज मेरे साथ दफ्तर की ओर भागे जा रहे थे। असर था उस कागज पर लिखे उस सरकारी संदेश का, जो बस इतना ही कहता था कि समय से आओ, काम करो और समय से जाओ और जिंदगी सरपट दौडने लगती है। हम भारतीयों को अंतिम तिथि, अंतिम समय, आदेश का डंडा, धमकी की बहुत जरुरत होती है, इसके बिना हमारी कर्तव्य निष्ठा नही जागती है। सोचते सोचते समय से कार्यालय तो पहुँच गया, लेकिन अफसोस, मैं पहला नही था, और भी कई बदहवास चेहरे जल्द ही उस छोटी से प्यारी से जीवमितिक यंत्र (Biometric) के समक्ष अपनी उंगली अंगूठा लिए कतारों में खडे थे, जो सबसे सामने थे, उपहास भरी दृष्टियाँ पीछे वालों की तरफ फेंक रहे थे, कई चेहरे, कई सवाल, और उन सवालों से बेखबर मैं सबको सुन रहा था, आखिर वो वक्त आ ही गया, कार्यालय पहुँचने का निर्धारित समय तो गुजर ही चुका था उस छोटे से प्यारे से यंत्र के चक्कर में, जो अंतर्जाल (internet) पर निर्भर थे। उन दुश्मन मशीनों को शायद हमारी उलझन का एहसास था, और इस घोर विपदा के क्षणों में उन्होने भी अपनी सारी करामात दिखाने में कोई कोर कसर न छोडी। तमाम तरह के Error, सिग्नल फेल के संदेशों से गुजरता हुआ वहाँ का माहौल चिंताजनक हो चुका था। मेरी जिस खतरनाक शक्ल को कोई एक बार देख ले तो भूलता नही, उसे इस कमबख्त मशीन ने पहचानने से इंकार कर दिया था और फिर आरंभ हो गई वही सदियों पुरानी जंग, मानव और मशीनों की जंग। बहुत अनुनय विनय, सभी अंगूठे उँगलियों का प्रयोग करते हुए आखिरकार मैंने

20 मिनट बाद पहचान प्राप्त कर ही ली और मेरी शुभ उपस्थिती दर्ज हो ही गई। मन फूला नही समा रहा था, बहुत बडी विजय थी ये मेरे लिए और उन सबके लिए भी जिन्होने सुबह 5.00 बजे से अपने ख्वाबो से समझौता किया था, विजयी मुस्कान के साथ थोडी अकड सी महसूस कर रहे थे सब। मुख ऊंचा किये गर्वोन्नत मस्तक उठाए अपने कक्ष में दाखिल होते ही सबने राहत की सांसे ली और फिर चर्चाओं में लिप्त हो गये कि अब कार्यालय से शाम को जाते समय भी यही स्थिति रही तो क्या करेंगे। आखिर मशीन ही तो है वो, हमारा नया मालिक। कोई अगर खुश था तो हमारा ऑफिस कैंटीन, अब उसकी पूछ परख सब बढ गई थी, नाश्ता, चाय के लिए फोन घरघराने लगे शंकाओं से निवृत्ति के लिए प्रसाधन कक्षों के पास भी कतारें आसानी से देखी जा सकती थी। आखिर समझौते कई स्तरों पर हुए थे, और ये समझौते वातावरण को प्रदूषित भी कर सकते थे। कार्य तो सामान्य समय पर ही आरम्भ हुआ, जिसकी आदत है लोगों को। जो बहुत दूर से आ रहे थे और बहुत भोर से निकले थे, वे अपने नित्य कर्म से जुडी वस्तुएं भी लाये थे। नियमानुसार 24 घंटे के लिए शासकीय कर्मचारी होने की परिभाषा के अंतर्गत अब सभी व्यक्तिगत कार्य कार्यालय में ही किए जाने की बाध्यता को सभी ने खुले दिल से स्वीकार कर लिया था। आरंभिक एक दो घंटे तो खामोशी छाई रही, कुछ लोग अधूरे ख्वाबों को पूरा करने की जुगत में भी दिखे, कुछ जागते हुए से लगे। इस पूरी प्रक्रिया में उन लोगों से भी बात हुई जिनसे नही हुआ करती थी, इस दुख की घडी में हम सभी साझीदार थे। कार्यालय के इस वैज्ञानिक कदम ने हमारे बीच की दूरियां मिटा दी थी, क्या राजा क्या रंक, सब एक कतार में थे वहाँ, तिस पर भी वो कातिल मुस्कान भी भुलाए नही भूलेगी जो अधीनस्थ के चेहरों पर आती रही चूंकि वे अपने वरिष्ठजन से बहुत आगे खडे थे उस कतार में, मानो एक एक दिन की विजय ने उनके सारे पापों को धो दिया हो और आगे लंबे समय तक के लिए अभयदान जैसा कुछ

—मनमोहन धीर

दिल दोस्ती दुनियादारी
... एक संस्मरण

पौर्णिमा एन. सालवे
कनिष्ठ अनुवादक

जी हां .... सही पढ़ा आपने। सोच रहे होंगे कि सीमाशुल्क कार्यालय में दिल दोस्ती दुनियादारी कहॉ से आयी? मगर सीमाशुल्क में मेरा आरंभ ही इससे हुआ, जिसने मुझे सीमाशुल्क के तीनों अंचलों से एक साथ जोडे रखा।

मुंबई कस्टम्स का बहुत नाम सुना था मैंने। भारत सरकार की नौकरी और वह भी सीमाशुल्क में, इससे बढिया दुग्ध शर्करा संयोग तो दूसरा न होगा। यह संयोग मेरे साथ घटित हुआ और वर्ष 2017 में कर्मचारी चयन आयोग व्दारा ली गई संयुक्त परीक्षा में उत्तीर्ण हो माह जनवरी, 2019 में मैंने मुंबई सीमाशुल्क अंचल में कनिष्ठ अनुवादक के तौर पर प्रारम्भिक रुप से ज्वाइन किया। नियुक्ति की प्रक्रिया से पूर्व ही मेरे साथ चयनित हुए कनिष्ठ अनुवादकों से परिचय हुआ। परंतु उनसे मिलकर यह कतई नही लगा की हम पहली बार मिल रहे हैं ....मानो हमारी पहले से ही पहचान हो। श्री. सत्यवान रेडकर और श्रीमती प्रियंका राजपूत और मैं आपस में इतने घुलमिल गए कि मानो तीनों सदियों से एक दूसरे के दोस्त हो।

तीनो ने कुछ समयान्तर से सीमाशुल्क अंचल। में ज्वाइन किया और साथ काम करने लगे। तभी हमारे सामने सांस्कृतिक विभाग की प्रमुख श्रीमती कीर्ति राठोड जी ने केंद्रीय राजस्व खेलकूद और सांस्कृतिक बोर्ड व्दारा आयोजित नाटक प्रतियोगिता में सहभागी होने का प्रस्ताव रखा। विद्यालयीन स्तर के पश्चात आज नए रुप से मुझे मंच पुकार रहा था। साथ ही एक डर सा भी लग रहा था.... पता नहीं कर पाएंगे भी या नही....। तभी मेरे इन दोस्तों ने मेरा ढांढस बढाया और हम एक साथ नाटक में काम करने के लिये तैयार हुए।

नाटक का नाम क्या था..... दिल दोस्ती दुनियादारी..... जी हॉ.... यही तो था हमारे नाटक का नाम। जैसे उनमे घुल मिल गए। समय की कमी के बावजूद भी हम सबने मिलकर खूब प्रैक्टिस की। कभी किसी की गलतियों का मजाक उडाते तो कभी किसी की अच्छी एक्टिंग की सराहना भी करते। मेरे हिस्से में तो यह दोनों भी आये। प्रैक्टिस की एक और बात मुझे हमेशा याद रहेगी वो थी हमारी ग्रांड लंच। हर कोई घर से हर रोज कुछ न कुछ स्पेशल बनाकर लाता था... जिससे पेट तो भर जाता ...मगर मन नहीं भरता था।

हमारे नाटक का विषय था – रीयूनियन – कॉलेज मे साथ पढनेवाले दोस्त 25 साल बाद मिलते हैं और अपने अपने जीवन में हुए बदलाव को एकदूसरे के साथ साझा करते हैं। नाटक में हर एक किरदार अपनी भूमिका को सामाजिक तौर पर न्याय दिलाने की कोशिश करता हैं..... जिसमे से एक किरदार मेरा था..... वसुंधरा।

वसुंधरा.... एक सामान्य गृहिणी, घर का सारा कामकाज करनेवाली एक मोटी सी महिला, जो 24 घंटे अपने घर परिवार, बच्चे, उनकी पढाई, मेहमान, उनकी मेहमान नवाजी में जुटी हुई हैं। इतनी व्यस्त हैं कि खुद को छोड कर सभी का ध्यान रखती हैं। उसे न अपने बढते वजन की चिंता हैं न बिगडते स्वास्थ्य की। किन्तु फिर भी वह खुश हैं अपनी जिंदगी से। बेहद खुशमिजाज रुप से अपनी जिंदगी व्यतीत करती हैं। न किसी बात की चिंता हैं न ही किसी से नाराज है। कोई उसके मोटापे को लेकर चिढाए फिर भी शांत रहती है..... पूछने पर बस इतना कह देती है.... ''नहीं .....नहीं लगता अब मुझे बुरा.... हाउस वाइफ जो ठहरी ..... इन हाउस वाइफ को रुठने का कोई हक नहीं होता.... होता है तो सिर्फ करना. ... काम... जी.... मैं ही तो हूँ सुबह का अलार्म... फिर उसके बाद कुक बन जाती हूँ.... बच्चों को संभालने वाली दाई.... पढानेवाली टीचर.... दवाईयां देने वाली नर्स भी तो मैं ही हूँ। कभी कबार मेहमानों के घर आने पर उनकी आवभगत करनेवाली रिसैप्शनिस्ट भी तो मैं ही हूँ। 24 घंटों काम ही काम..... न कोई छुट्टी न तनख्वाह.... और जब तनख्वाह ही नहीं तो फिर प्रमोशन का सवाल ही नहीं आता। फिर भी लोग पूछते हैं.... तुम करती क्या

हो???? समस्त गृहिणियों की भावनाओ को पूरे नाटक में उजागर किया हैं इस वसुंधरा ने। जिसका किरदार निभाते मुझमें भी इन गृहिणीयों के प्रति आदर कई गुना बढ गया हैं।

अब आते हैं इस नाटक के सही मोड पर, जिसे हमें प्रस्तुत करना था पुणे के बालगंधर्व नाट्यमंदिर मे। हमारे साथ ही अन्य राजस्व कार्यालयों ने भी अपनी अपनी प्रतिभाओं की झलकियॉ प्रस्तुत की थी। अब बारी थी हमारी। मंच पर जाने से पूर्व हम सभी के दिल जोर जोर से धडक रहे थे.... यदि इन्हें डेसीबल्स में नापा जाएँ तो यह ध्वनि प्रदूषण की मात्रा को पार कर जाती। आखिरकार हम सब मेकअप, वेषभूषा आदि तामझाम कर मंच पर स्फूर्ति से उतरें और जैसे ही पर्दा उठा सभी ने जी जान लगाकर नाटक प्रस्तुत किया.... तब जाकर कलेजे में ठंडक पडी। कुछ तकनीकी समस्याओं को नजरअंदाज करें तो हमने अपना नाटक पूरी ईमानदारी से निभाया था।

प्रतियोगिता के परिणाम की हमे कोई चिंता नही थी। हमने अपनी तरफ से अच्छे से निभाया यही हमारे लिए खुशी का कारण था, किन्तु मन के किसी कोने में आस भी थी कि शायद हम ही जीत जाये।

सभी प्रस्तुतियों के पश्चात बोर्ड के सम्माननीय उच्चपदस्थ अधिकारी और चित्रसृष्टि के महान कलाकार श्री. मोहन जोशी जी की उपस्थिती में पारितोषिक वितरण समारोह की शुरुआत हुई। जैसे ही नाटक प्रतियोगिता के परिणाम घोषित होने लगे, हमारे सब के कान खडे हो गए और हम गौर से परिणाम सुनने लगे। हमारे नाटक को तीन विभागो में बेस्ट एक्टर (द्वितीय स्थान) मुझे अर्थात वसुंधरा का किरदार निभाने वाली पौर्णिमा सालवे, कनिष्ठ अनुवादक, जेएनसीएच, बेस्ट सेट डिजाइन (द्वितीय स्थान) श्री. राजेश आहूजा, कर सहायक, जेएनसीएच और बेस्ट लाइट (द्वितीय स्थान) श्री. राजेंद्र कवटे, कर सहायक, मुंबई सीमाशुल्क, अंचल ।।। को पुरस्कार प्राप्त हुए। हमारी केवल 20 दिनों की मेहनत रंग लायी थी और उसी मेहनत के कारण हमने 3 पुरस्कार भी प्राप्त कर लिए। हम सब खुशी से नाच रहे थे उस वक्त।

पुरस्कार लेने के लिए जब मंच पर अपना नाम पुकारा जाता हैं ना... वह भावना शब्दों में व्यक्त करना असंभव हैं। मेरा दिल फूले नहीं समा रहा था। मन मचल रहा था और रोम रोम खुशी से नाच रहा था। मेरे पसंदीदा एक्टर श्री. मोहन जोशी जी के करकमलों द्वारा बेस्ट एक्टर ।। की ट्रॉफी लेने के बाद तो मेरा दिल एक ही गाना गुनगुना रहा था.... ''आज मैं उपर... आसमां नीचे... आज में आगे.... जमाना हैं पीछें। स्कूली जीवन के पश्चात मेरे जीवन मे यह पल कई सालों बाद आया था।

मुंबई सीमाशुल्क में नियुक्त होने के पश्चात केवल 20 दिनों के अंदर ही मुझे यह उल्लेखनीय कार्य करने और नाटक के कारण तीनों अंचलों में कार्यरत अधिकारियों के साथ जुडने का अवसर प्राप्त हुआ, इसलिए मैं मुंबई सीमाशुल्क की शतश: आभारी हूँ।

दिल से शुरु हुई इस दोस्ती को बरकरार रख अपनी अपनी दुनियादारी सँभालते हुए अगले वर्ष की प्रतियोगिता की राह हम सब देख रहे हैं..... साथ ही प्रथम पुरस्कार की आशा भी पल्लवित हो रही हैं।

■■■

मुंबई सी लाईन - श्री.मनोज दास, अधीक्षक द्वारा लिया गया चित्र

कंकड

- एक कविता

शांत पानी में कंकड मारा,
आवाजें निकली,
कुछ हलचल भी हुई,
सतह पर,
सतह के नीचे,
और सतह के ऊपर.

लेकिन,
सब, सब कुछ कहाँ देख पाता है.
एक हमपथगामी ने प्रश्न किया,
जिसके चेहरे पर
आवाज एवं हलचल जान जाने
की चतुरता स्पष्ट थी,
कंकड आपने मारा?
कर्ता शांत रहा,
नि:शब्द,
अनुत्तरित.

उसे दया आई,
उस पथगामी के सब जान जाने वाली सोच पर,
किसी के स्वभावगत हस्तक्षेप पर,
कर्म के और भी कारकों पर ना सोच पाने पर,
और अंतत:कर्म के उद्देश्य तय कर पाने पर.

क्योंकि,
कंकड
ना तो आवाज, ना हलचल के लिए,
कुछ और उद्देश्य के लिए,
हो सकता है 'निरुद्देश्य',
मारा गया था,

—श्री. संजीव सज्जन मुकुंद
सीमाशुल्क अधीक्षक

ब्लॉस्मिंग इनसाइड आउट (जीवन जीने की कला) पुस्तक के कुछ अंश

-लेखक-कमलेश पटेल जी

संबंधो में सुधार (नेटवर्किंग)

आपके आसपास जो हैं उन सबको प्यार करें और उनकी जिंदगी में आनंद भर दें।

संबंधों का असर, जीवन में क्या होता है, आइए इसे 2 अनुभवों से समझते हैं।

आज के अखबार में मैं अपनी फोटो देखकर चीख पड़ा। ओह! यह तो मैं हूँ!!! लेकिन यह शोक समाचार वाले स्तम्भ में क्यो है ?

आश्चर्य है! रुकों! जरा एक क्षण सोचने दो।

कल रात जब मैं सोने जा रहा था तो मुझे सीने में दर्द हुआ था। उसके बाद... तो मुझे कुछ याद ही नहीं! शायद सो गया था।

अभी सुबह हो गयी है। दस बज गये हैं। मेरी कॉफी कहाँ है? ऑफिस के लिये देर हो रही है। बॉस को मौका मिल जायेगा, मुझे डाँटने का।

"सब कहाँ है?" मैं चिल्लाया!!!

"लगता है मेरे कमरे के बाहर बहुत सारे लोग हैं। "मैं देखता हूँ," मैंने अपने आप से कहा।

"बहुत सारे लोग हैं। सब तो नहीं लेकिन कुछ लोग रो क्यों रहे हैं ?" "ये क्या है?" "मैं यहाँ फर्श पर लेटा हूँ!" "मैं यहाँ हूँ" मैं जोर से चिल्लाया!!! "देखिये मैं मरा नहीं हूँ।" कोई सुनता नहीं है... मैं एक बार और चिल्लाया। अरे कोई मुझे देखता क्यों नहीं हैं कोई नहीं सुनता। किसी को मुझसे मतलब नहीं है।

सारे के सारे फर्श पर पड़े मेरे जैसे शरीर को देख रहे हैं। मैं वापस अपने सोने के कमरे में गया। "क्या मैं मर गया हूँ?" मैने अपने आप से पूछा। "मेरी पत्नी कहाँ हैं? बच्चे, माँ बाबूजी कहाँ हैं?"

मैंने उनको दूसरे कमरे में देखा। सब एक दूसरे को आश्वासन देते हुए रो रहे थे।

श्रीमती जी रो रहीं थीं। वो बहुत दुःखी लग रहीं थी। छोटे से बच्चे को समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। लेकिन वो अपनी माँ को देख कर रो रहा था।

मैं अपने बच्चे से कितना प्यार करता हूँ, यह बताये बिना मैं कैसे जा सकता हूँ? मैं उसकी बहुत परवाह करता हूँ। मेरी पत्नी बहुत सुंदर है और दुनिया की सबसे ज्यादा देखभाल करने वाली औरत है। यह सब उसे बताये बिना कैसे जा सकता हूँ?

"मैं आज जो कुछ भी हूँ वो उनके कारण हूँ, यह मेरे माता-पिता को बताये बिना मैं कैसे जा सकता हूँ?"

अपने दोस्तों को बिना बताए कैसे जा सकता हूँ कि अगर तुम न होते तो मैंने जीवन में कितनी गलतियाँ की होती।.... "जब भी मुझे उनकी जरुरत थी वो हमेंशा मेरे साथ थे"। मैं उनका बहुत आभारी हूँ और मैं बहुत शर्मिंदा भी हूँ कि जब उन्हें मेरी जरुरत थी तब मैं नहीं था।

मैं देखता हूँ कि एक व्यक्ति एक कोने में खड़ा है और वो अपने आँसू छिपा रहा है। कभी वो मेरा सबसे अच्छा दोस्त हुआ करता था। लेकिन एक गलतफहमी ने हमें अलग कर दिया था। हम दोनों के अपने अहंकारों के कारण हम दुबारा मिल नहीं पाये थे।

मैं उसके पास गया और अपना हाथ बढ़ाया। "प्रिय मित्र मैं तुमसे माफी माँगना चाहता हूँ। हम अभी भी अच्छे दोस्त हूँ। मुझे माफ कर दो!

कोई उत्तर नहीं! यह क्या है? यह अभी भी अपना अहंकार रखे हुए हैं। मैंने क्षमा माँगी, फिर भी! "जाओ मैं ऐसे लोगों की परवाह नही करता"।

किन्तु शायद ऐसा लगता है कि वो मुझे देख नहीं पा रहा है। हे भगवान! क्या मैं सच में मर गया हूँ?

मैं वहीं बैठ गया। मुझे रोना आ रहा था।

हे भगवान! दया करो! मुझे थोड़े दिन और दे दो। अपनी पत्नी, माँ बाप, मित्र और बच्चों को समझाना है कि मैं उनसे कितना प्यार करता हूँ।

श्रीमती जी कमरे में आयीं। वो बहुत खूबसूरत लग रहीं थी। "तुम बहुत खूबसूरत हो", मैंने कहा।

वो मुझे सुन नहीं पायी। वास्तव में वो यह शब्द कभी सुन ही नहीं पायी, क्योंकि मैंने उसे कभी यह कहा ही नहीं!!!

"हे भगवान!," मैं चिल्लाया। मेहरबानी करके मुझे थोड़ा समय और दे दो। मैं रोया, गिडगिड़ाया!

"एक और मौका प्लीज" एक और मौका। मेरे बच्चे से लिपटने के लिए, मेरी माँ सिर्फ एक बार हँसाने के लिये कम से कम एक बार मेरे पिता को मुझ पर नाज कराने के लिये, अपने मित्रों से माफी मांगने के लिए। एक मौका और भागवान। एक मौका और!!!

मैंने ऊपर देखा, रोया और चिल्लाया.... हे भगवान, एक और मौका मेहरबानी करके दे दो.

मेरी पत्नी ने धीरे से उठाया और कहा 'यह आप नींद में क्या चिल्ला रहे हो? कोई बुरा सपना देखा है क्या?

मैं सो रहा था!

वो तो सिर्फ एक सपना था। मेरी पत्नी यहाँ है, मुझे सुन पा रही है। वो मेरी जिंदगी का सबसे सुखी पल था।

तुम इस दुनिया की सबसे खूबसूरत पत्नी हो। सबसे ज्यादा परवाह करने वाली पत्नी हो ।

उसके चेहरे पर मुस्कुराहट और आँखों में आँसू थे। कारण मुझे नहीं पता। पर मैं बहुत खुश था।

धन्यवाद प्रभु। दूसरे मौके के लिए!

अभी भी इतनी देर नहीं हुई है कि अपने घमंड और भूतकाल को न भूल पाएँ। दूसरों के प्रति अपने प्रेम का इजहार करें। मिलता करें। मुस्कुराते रहें। घमंड को भूल कर प्रेम, प्रशंसा और मिलता दिखाते रहें क्योंकि हो सकता है कि हर बार 'दूसरा मौका' न मिले। कुछ हो जाने के बाद पछताने का मतलब नहीं रहेगा।

"जहाँ प्रेम है वहाँ जीवन है"- गाँधीजी

संकलन कर्ता

रूपेश एस सक्सेना

पहचान

- एक कविता

कल रात बालकनी से देखा वह तारा
देखा करता था बचपन में जिसको
अपने सझिया आँगन से
तारा था कुछ धुंधला मटमैला
मुरझाया और बदला-बदला सा
मैंने पूछा क्या बात हुई
क्यों इतना बदल गए हो
पहले कितना तुम इठलाते लहराते बलखाते थे
जाने क्यों अब मुरझाये से लगते हो ॥

हँसकर तारा फिर बोला
मैं बदला या तुम बदले
याद नहीं शायद तुमको
हम कितने दिन बाद मिले
भूल गए हो शायद तुम
पर याद मुझे तुम अब भी हो
गाँव का वह मासूम सा बच्चा
कितना भोला-भाला था
काकी के आँखों का तारा
काका का दुलारा था
मम्मी का वह प्यारा बच्चा
पुरे गाँव में न्यारा था॥

बड़ा हुआ परदेस में आया
आगे उसको बढ़ना था
आगे बढ़ने की आपा-धापी में
खुद की ही वह भूल गया
भूल गया वह खेत की क्यारी
लगती थी जो जन्नत से प्यारी
भूल गया वह आम का बाग
मंदिर की चौखट पोखर का घाट
दादी के किस्से बाबा का दुलार
माँ का आँचल और पापा का प्यार ॥

घबराया सुनकर तारा की मैं बात
नहीं-नहीं यह बात नहीं
तुम जाने ऐसा क्यों कहते हो
मैं तो बस वैसा ही हूँ
हाँ! थोड़ा एडजस्ट तो करना पड़ता है॥

गौर से उसने देखा मुझको
नज़र मिला ना पाया मैं
धीर-गंभीर तारा फिर बोला
अंधी दौड़ में दौड़ रहे हो
जिसका ना कोई पता-ठिकाना है
खुद को मत बदलो इतना
कि पहचान ही मिट जाए
ऐसा ना हो बालकनी से
आँगन का वह तारा
फिर कभी नज़र ना आए
फिर कभी नज़र न आए॥

बिकती हुई किस्मतें....

- व्यंग्य

मुंबई । सपनों की नगरी । महानगर भी है तो ट्राफिक तो होगा ही। रोज की तरह आज भी इस व्यस्त सडक पर बहुत ट्राफिक था। थोडी थोडी दूर पर लगे हुए सिग्नल पॉइंट्स एक छोटा मोटा बाजार हो जाया करते हैं अगर बसाहट पास ही हो तो। ऐसी ही एक बसाहट का बाशिंदा था 10 साल का छोटू... बोले तो छटांक भर छोटू... उसके दोस्त उसे ऐसे ही बुलाते थे। कोई पूछे उससे कि दिन भर क्या करता है तो वो बडे शान से कहता है कि अक्खी मुंबई को किस्मत बेचता है अपुन। बोलो तुमको कैसी मांगता है???

सिग्नल पे सुबह से देर रात तक रुकने वाली गाडियों के सामने लपक कर पहुँच जाता है छोटू और जोर से चिल्ला के पूछता है – कौन सी किस्मत लोगे बाबू? कौन सा भाग्य लोगी दीदी? घोडे पे सवार राजा जैसा दूल्हा पहले या बडी सी बिल्डिंग में ठंडी ठंडी एसी नौकरी के बाद वहीं कोई देख लोगी या प्लेन में बैठ के उडना चाहती हो बिदेसी दूल्ह के पास?? बिजनेस वाली किस्मत भी है उसके पास लाखों करोडों वाली। और जैसे ही अभागा या अभागी के चेहरे पे मुस्कुराहट आई, लपक के बांध देता है मुंहमांगी किस्मत उस गाडी पे...।

रात सोने से पहले जितनी गॉठें, माँ घर पर तैयार करती है उन्हें तो सुबह 11 बजे तक ही निपटा देता है छोटू, फिर वो खरीदता है पहले से तैयार किस्मतें..... अपने ही दोस्तों से कम दामों पे..... यही बडा बिजनेस है छोटू का। उसका बस चले तो वो पूरे मुल्क की किस्मत दौड दौड कर ही बदल दे ताजी चार हरी मिर्चें और एक नींबू से। बडी किस्मत वाला है छोटू और उसकी ये बिकती छोटी बडी किस्मतें भी।

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा, सीमाशुल्क मुंबई, अंचल II में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन वर्ष 2018-19

- रिपोर्ट

सरकारी तंत्र में सतर्कता शब्द का बहुत महत्व है और इस शब्द के व्यापक अर्थ को कार्यान्वित करने के लिए सभी सरकारी कार्यालय और संस्थान सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन करते हैं । हमारे सीमाशुल्क मुंबई अंचल II के जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में भी केंद्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशों के अनुसार दिनांक 29.10.2018 से 3.11.2018 तक 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' मनाया गया । इस बार का थीम था "भ्रष्टाचार मिटाओ–नया भारत बनाओ"

(Eradicate Corruption-Build New India) ।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के उपलक्ष्य में जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में लगाए गए बैनर एवं बोर्ड।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के पहले दिन दिनांक 29.10.2018 को सीमाशुल्क भवन में सतर्कता जागरूकता सप्ताह की जानकारी से संबन्धित बैनर लगवाए गए । सतर्कता जानकारियों से संबधित परिपत्र एवं पैम्प्लेट्स का वितरण किया गया । निर्धारित समय पर सभी उच्च अधिकारीगण, कर्मचारियों को मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क ने सतर्कता की शपथ दिलवाई । जेएनसीएच के सभी अधिकारियों द्वारा ऑनलाइन शपथ लेने के लिए सूचनापट्ट पर ई- शपथ प्रदर्शित कराई गई साथ ही अन्य नागरिकों को भी शपथ दिलाने हेतु शपथ को वैबसाइट पर भी अपलोड किया गया । सतर्कता जागरूकता सप्ताह के पहले दिन कुल 223 अधिकारियों, 17 ग्राहकों और 27 अन्य नागरिकों ने शपथ ग्रहण की ।

सतर्कता की शपथ लेते अधिकारीगण

दिनांक 31.10.2017 को समय 1100 बजे जे.एन.सी.एच. के कौंफ्रेंस हाल में अधिकारियों / कर्मचारियों के लिए "भ्रष्टाचार मिटाओ–नया भारत बनाओ" विषय पर एक वादविवाद प्रतियोगिता का (हिन्दी और अँग्रेजी में) आयोजन किया गया । कुल 12 अधिकारियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया । इसमें प्रथम स्थान श्री. अशोक कुमार झा,निवारक अधिकारी और श्री. आशीष कुमार अग्रवाल, परीक्षक ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया ।

वादविवाद प्रतियोगिता के साथ ही उक्त विषय पर समय 1500 बजे निबंध लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया । हिन्दी निबंध लेखन में श्री जितेंद्र कुमार, परीक्षक, और श्री. विक्रम कुणाल, परीक्षक ने और अँग्रेजी निबंध लेखन में श्री आशीष कुमार अग्रवाल, परीक्षक और श्रीमती रिनी लवानिया, कर सहायक ने क्रमशः प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त किये ।

"भ्रष्टाचार मिटाओ–नया भारत बनाओ" विषय पर निबंध प्रतियोगिता में भाग लेते अधिकारीगण

सतर्कता जागरूकता को केवल जे.एन.सी.एच. तक सीमित न रखते हुए उसे समाज के सामान्य हिस्सों तक फैलाने के उद्देश्य से सतर्कता विषय पर दिनांक 01.11.2018 को सेंट मेरी'ज जेएनपी विद्यालय और जवाहरलाल नेहरू पत्तन विद्यालय में कक्षा 6 तक के छात्रों के लिए चित्रकला स्पर्धा और कक्षा 7 तक के छात्रों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों ने समूचे उत्साह के साथ भाग लिया ।

सामान्य हिस्सों तक फैलाने के उद्देश्य से सतर्कता विषय पर दिनांक 01.11.2018 को सेंट मैरीज जेएनपी विद्यालय और जवाहरलाल नेहरू पत्तन विद्यालय में कक्षा 6 तक के छात्रों के लिए चित्रकला स्पर्धा और कक्षा 7 तक के छात्रों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों ने समूचे उत्साह के साथ भाग लिया ।

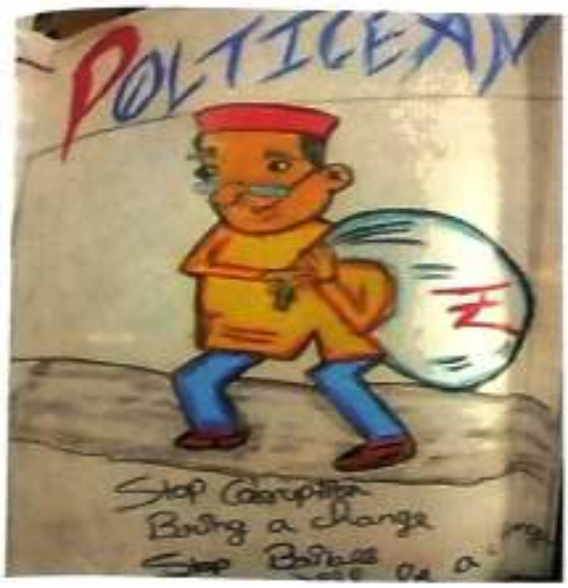

सतर्कता जागरूकता सप्ताह में स्कूली बच्चों द्वारा बनाया गए पोस्टर।

दिनांक 02.11.2018 को समय 1100 बजे जेएनसीएच, न्हवा शेवा में "सत्यनिष्ठा और कार्य नैतिकता" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया । वेलिंगकर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, डेव्लपमेंट अँड रिसर्च , माटुंगा के प्रख्यात प्रोफेसर श्री. विजय पंकजाक्षण जी ने मार्गदर्शन किया । जिसके संयोजक श्री. विवेक जौहरी , मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क, अंचल -II थे जेएनसीएच के सभी आयुक्त ,संयुक्त आयुक्त, अपर आयुक्त, उपायुक्त/ सहा. आयुक्त और सभी अधिकारी संगोष्ठी में उपस्थित थे ।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2018 का पुरस्कार वितरण समारोह

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2018 का समापन पुरस्कार वितरण समारोह से हुआ । इस दौरान वादविवाद प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता और चित्रकला प्रतियोगिता के सभी प्रतिभागियों को प्रशंसा पत्र वितरित किए गए और प्रथम और द्वितीय पुरस्कार प्राप्त विजेताओ को रुपये 1500/- एवं रुपये 1000/- के नकद पुरस्कार प्रदान किए गए । प्रशंसा पत्र एवं नकद राशि पुरस्कार श्री विवेक जौहरी, मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क, जे एन सी एच, न्हावा शेवा और जे एन सी एच के अन्य आयुक्तों के करकमलों से वितरित किए गए ।

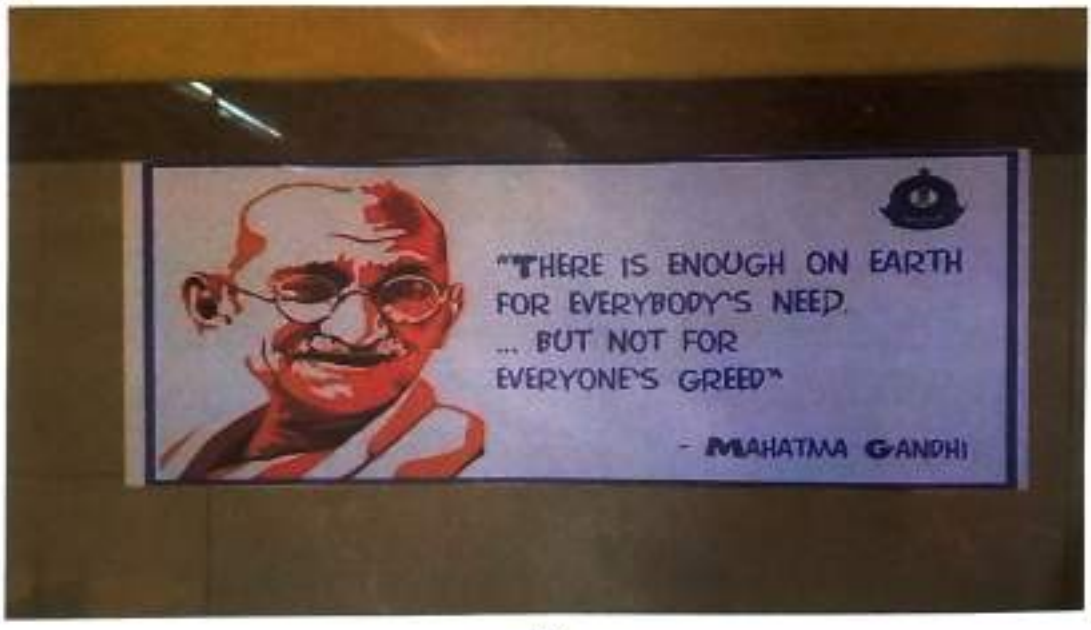

कुछ लोकोक्तियाँ (Proverbs)

A small leak will sink a great ship	-	घर का भेदी लंका ढाए
A Drunkard is qualified for all vices	–	जैसा अन्न, वैसा मन
Eye for an eye	-	जैसे को तैसा
See which way the wind blows	-	तेल देखो, तेल की धार देखो
There is something fishy	-	दाल में काला होना
The goal is distant	-	दिल्ली दूर है
Riches have wings	-	दौलत आज मेरी, कल तेरी
An ill payer never needs an excuse	–	न देने के हजारो बहानें
A wolf in sheep's clothing	-	मुंह मे राम बगल मे छुरी
Wolves may lose their teeth, but not their temper	–	रस्सी जल गई किन्तु बल नहीं गया
Birds of a feather flock together	-	सब एक ही थाली के चट्टे बट्टे हैं
The cheap buyer takes the bad meat	–	सस्ता रोये बार बार महंगा रोए एक बार
Rome was not built in a day	-	हथेली पर सरसो नहीं जमती
Putting the cart before the horse	-	उल्टी गंगा बहना

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती समारोह और 'स्वच्छता अभियान' के अवसर पर आयोजित गतिविधियाँ

- रिपोर्ट

सीमाशुल्क मुंबई अंचल में 02 अक्टूबर 2018 को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती के समारोह संबंधी गतिविधियां आरंभ हो चुकी हैं। स्वच्छ भारत अभियान का लक्ष्य 2019 तक हर गाँव, शहर, कस्बे को साफ़ करना और पक्के शौचालय, पीने का साफ पानी, कचरा निपटाने की ठोस व्यवस्था करना है । महात्मा गांधी ने मानव समाज में 'स्वच्छता" की अवधारणा को सर्वोपरि रखा । इस सीमाशुल्क अंचल में भी कई गतिविधियां आयोजित की गईं । जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन के प्रांगण में कई प्रमुख स्थानों पर महात्मा गाँधी के विचारों उनके चित्रों के साथ प्रदर्शित किया गया और 'विजन ऑफ महात्मा गाँधी फॉर इंडिया' विषय पर एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसमें भारतीय नागरिक और सरकारी तंत्र में जुड़े होने के कारण देश के प्रति उत्तरदायित्व पर चर्चा हुई ।

जे.एन.सी.एच., न्हावा शेवा में स्वच्छ और साफ सुथरे काम के माहौल को बनाए रखने के लिए इनहाउस स्वच्छता सुनिश्चित करने के उद्देश्य हेतु दिनांक 4.01.2019 से 31.01.2019 तक विशेष 'स्वच्छता अभियान' चलाया गया । इसमें सभी कार्यालय अध्यक्षों, उच्च अधिकारियों एवं अन्य कार्मिकों ने दिनांक 23.01.2019 को स्वच्छता शपथ' ली जिसमें उन्होने अपने आस पास के क्षेत्र, कार्यालय परिसर को स्वच्छ रखने और दूसरों को स्वच्छता के बारे में जागरूक बनाने की प्रतिज्ञा ली । कार्यालय में कार्यरत सभी अनुभागो को पुराने और अवांछनीय रेकॉर्ड्स, हार्डवेयर हटाने एवं अनुभागो को स्वच्छ रखने के लिए आदेश जारी किए गए एवं एक सघन स्वच्छता अभियान चलाया गया ,जिसमें बेकार के स्टिकर या पोस्टर आदि को दीवार से हटाया गया । पेपर रेकॉर्ड एवं पुरानी

फाइलों के रखरखाव हेतु मेसर्स राइटर बिज़नस प्रा. लिमिटेड नाम की ऑफसाइट स्टोरेज फ़र्म की सेवाएँ ली गई । अधिकारियों द्वारा अनुभागो का स्वच्छता निरीक्षण किया गया। वित्तीय वर्ष 2018-19 हेतु 'स्वच्छता एक्शन प्लान' के अंतर्गत महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स पर काम किया गया । पहला था जेएनसीएच के प्रवेश द्वार का सौंदरीकरण, जिसके अंतर्गत प्रवेश में एक फव्वारा, एक वर्टिकल गार्डेन की स्थापना की गई एवं वार्ली पेंटिंग्स से सुसज्जित किया गया । साथ ही साथ 200 किलो प्रतिदिन की क्षमता वाले सूखे और गीले वेस्ट मैनेजमेंट प्लांट की स्थापना की गई जिससे खाद बनाई जाएगी। सीमाशुल्क कॉलोनी, पवई में एक चिप्पर श्रेडर स्थापित किया गया।

सीमाशुल्क अधिकारियों द्वारा 'निसर्ग स्वास्थ्य संस्थान' नाम के गैर सरकारी संगठन के सदस्यों के साथ मिलकर उरण के समुद्र तट' पर स्वच्छता अभियान चलाया गया जिसमें करीब 60 बोरी कूड़े को एकत्र करके उचित रूप से उसका निस्तारण किया गया

एक अन्य स्वच्छता अभियान के अंतर्गत मुख्य आयुक्त, आयुक्त, अपर आयुक्त, उप आयुक्त और अन्य सीमाशुल्क अधिकारियों ने एलिफन्टा गुफा, गरापुरी आदि क्षेत्र में सघन स्वच्छता अभियान चलाया । इसमें उन्होने एलीफेंटा गुफा के आस पास लगभग 76 बोरे कचरा एकत्र किया और उनका सुरक्षित स्थान पर रखवाया दिया ।

तालुका उरण के ग्रामपंचायत जसकर के सरपंच के अनुरोध पर दिनांक 13.03.2019 को कुल 50 सहभागियों और ग्राम वासियों ने मिलकर गाँव के मंदिर क्षेत्र , तालाब, गांव जाने के रास्तों में सफ़ाई अभियान चलाया गया । जसकर गाँव में स्वच्छता प्रोजेक्ट के अंतर्गत जिला परिषद स्कूल में लड़को एवं लड़कियों के लिए अलग अलग शौचालयों का पुनर्विकास करवाया गया ।

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

- रिपोर्ट

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी की पहल पर 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित करने का ऐतिहासिक फैसला लिया और यह स्वीकार किया कि आज योग को सम्पूर्ण विश्व ने सहर्ष स्वीकार कर लिया है । हमारे लिए यह गर्व का विषय है कि योग हमारी संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत का अविभाज्य अंग है ।

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए और आयुर्वेद, योग और नचुरोपैथी मंत्रालय के निर्देशानुसार दिनांक 21.06.2019 को जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में 5 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया ।

इस अवसर पर श्रीमती स्मिता डोलस, अपर निदेशक, लेखापरीक्षा महानिदेशालय (मुंबई) जो कि एक प्रसिद्ध योग अनुदेशक भी हैं, ने सीमाशुल्क भवन का दौरा किया और अपने सम्बोधन में रोजमर्या के जीवन, अपने कामकाज में तनावमुक्त एवं खुशहाल जीवन जीने के लिए योग की उपयोगिता के बारे में बताया ।

विभिन्न योग मुद्राओं में सीमाशुल्क अधिकारीगण

-: उपलब्धियाँ :-

1) जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क ,न्हावा शेवा में 'कर सहायक' के पद पर कार्यरत श्री इंद्रजीत दिलीप मोहिते राइफल शूटिंग इवैंट में अखिल भारतीय स्तर के शूटर हैं । उनकी प्रमुख उपलब्धियां है :

- 35वीं महाराष्ट्र स्टेट शूटिंग चैम्पियनशिप प्रतियोगिता 2018 में प्रोन & 3पी श्रेणी में उन्होने 02 गोल्ड मैडल जीते ।
- देहरादून में आयोजित IROSC ओपेन शूटिंग चैम्पियनशिप प्रतियोगिता, 2018 में विभिन्न श्रेणियों में 03 गोल्ड मेडेल जीते ।
- वर्ष 2018, नई दिल्ली में आयोजित भारतीय टीम के सेलेक्शन ट्राइल हेतु फ्री राइफल प्रोन श्रेणी में चयन, 10वीं रैंक हासिल की ।
- ऑल इंडिया जीवीएम शूटिंग चैंपियनशिप कम्पटीशन, कदरपुर, हरियाणा 2018 में फ्री राइफल 3पी श्रेणी में 1 गोल्ड मेडेल, स्टैंड राइफल 3पी श्रेणी में 1 सिल्वर मेडेल जीता ।
- इंडियन रेवेन्यू ऑफिसर शूटिंग चैंपियनशिप मीट 2017-18, 01 गोल्ड मेडेल - एयर राइफल श्रेणी, 01 गोल्ड मेडेल- स्माल बोर प्रोन श्रेणी

इंद्रजीत डी मोहिते

2) सी. आर. एस. सी. बी. केंद्रीय राजस्व खेलकूद और सांस्कृतिक बोर्ड के वेस्टज़ोन कल्चरल मीट, वर्ष 2018-19 में जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन की नवनियुक्त कनिष्ठ अनुवादक श्रीमती पौर्णिमा नारायण सालवे ने मुंबई सीमाशुल्क के तीनों अंचल में कार्यरत अधिकारियों समेत हिन्दी ड्रामा प्रतियोगिता में सहभागी होकर हिन्दी ड्रामा 'दिल दोस्ती दुनियादारी' प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होने ज़ोनल स्तर पर 'बेस्ट एक्टर' श्रेणी में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

3) उपरोक्त ड्रामा के संदर्भ में ही जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन के श्री. राजेश आहूजा , कर सहायक ने 'बेस्ट सेट डिज़ाइन' श्रेणी में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

4) मुंबई कस्टम्स की फुटबाल टीम मुंबई लीग में इलीट डिविजन चैम्पियन ,2018

प्रधान आयुक्त महोदय श्री सनीव्रत भट्टाचार्य के साथ विजेता टीम के सदस्य :-
सिराज कोया , प्रनील मेंडन , सज्जाद आलम , जोशुआ वेलावकर , हिकमत सिंह , जिंटों जोस , भूपाल बिष्ट , सी. एस. नजीर, मोनिश भामरे, आशीर्वाद हेगड़े, नितिन मूकनक और सोहेल अंसारी
कोच : सेड्रिक फर्नांडीस और सहायक कोच नितिन कोटीयन

-: छोटे चित्रकार :-

रक्षिता मीणा, आयु – 10 वर्ष, सुपुत्री श्री. शिव नारायण मीणा, अधीक्षक (नि)

श्रेया रुपेश सक्सेना, आयु – 10 वर्ष, सुपुत्री श्री. रुपेश एस. सक्सेना, वरिष्ठ अनुवादक

वन्दिता अमित पासवान, आयु – ६ वर्ष, [illegible]. अमित कुमार पासवान, निरीक्षक

मुद्रा संजय जगताप, आयु - 13 वर्ष, सुपुत्री श्रीमती सीमा संजय जगताप, स.मु.ते.अ.

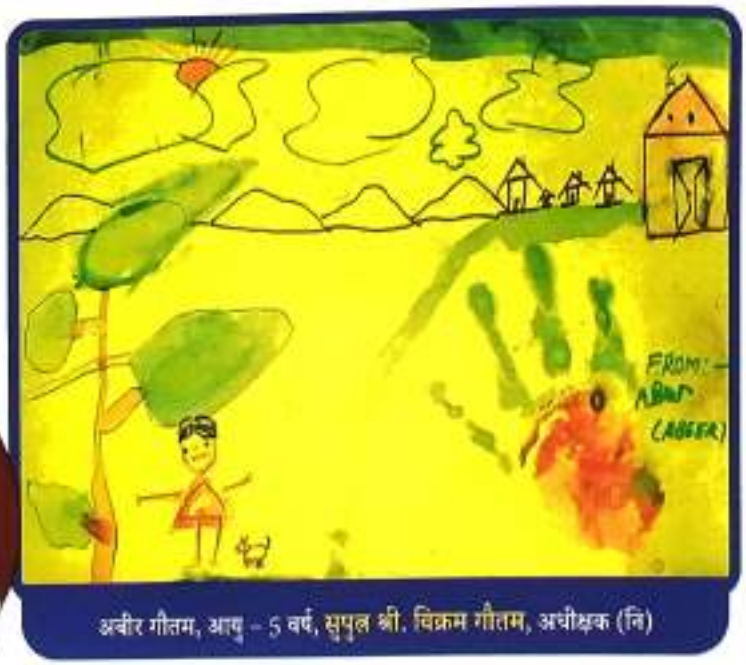

अबीर गौतम, आयु - 5 वर्ष, सुपुत्र श्री. विक्रम गौतम, अधीक्षक (नि)

आद्या झा, आयु - 13 वर्ष, सुपुत्री श्री. अशोक झा, निरीक्षक

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में
<u>हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2018 का आयोजन</u>

- रिपोर्ट

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में दिनांक **01.09.2018** से **14.09.2018** की अवधि के दौरान संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया ।

परंपरा के अनुसार सीमाशुल्क मुंबई अंचल II, जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा के अंतर्गत सभी आयुक्तालयों में दिनांक **14.09.2018** को हिन्दी दिवस के अवसर पर मुख्य आयुक्त महोदय का संदेश प्रसारित किया गया जिसमें सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं सरकारी नियमों के समुचित कार्यान्वयन पर ज़ोर दिया गया । सीमाशुल्क भवन में हिन्दी पखवाड़ा समारोह से संबन्धित बैनर प्रदर्शित किए गए और राजभाषा के प्रचार प्रसार हेतु अधिकारी एवं कर्मचारियों के मध्य विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में दिनांक **03.09.2018** को हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें अधिकारियों द्वारा भारत में पीढ़ी अंतराल की समस्या, स्वतंत्र भारत की उपलब्धियां, मोबाइल का जीवन में महत्व, एक कदम स्वच्छता की ओर आदि विषयों पर निबंध लिखा । इसके साथ-साथ हिन्दी एवं हिन्दीतर अधिकारियों के लिए दिनांक **5.09.2018** को टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, दिनांक **7.09.2018** को हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता सम्पन्न हुई जिसमें अधिकारियों एवं कर्मियों की सरकारी कामकाज हेतु अनुवाद क्षमता को जांचा गया ,दिनांक **10.09.2018** को वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें पक्ष और विपक्ष पर अधिकारियों ने अपने विचार व्यक्त किए । सीमाशुल्क भवन में कार्यरत उच्च अधिकारियों के हिन्दी के ज्ञान को परखने के लिए दिनांक **11.09.2018** को समूह 'क' वर्ग हेतु हिन्दी एवं हिंदीतर अधिकारियों हेतु श्रुतलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इन प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़ी संख्या में भाग लिया एवं अपने हिन्दी के ज्ञान को प्रदर्शित करते हुये प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन किया । सभी विजेताओं को प्रधान मुख्य आयुक्त महोदय के करकमलों से पुरस्कृत किया गया एवं प्रमाणपत्र भी वितरित किए गये। प्रधान मुख्य आयुक्त महोदय ने अपने भाषण में सभी विजेताओं को संदेश दिया कि वे अपने हिन्दी के ज्ञान को अपने सरकारी काम काज में काम में लाएँ। प्रतियोगिताओं का स्वरूप पूरी तरह से गंभीर कार्यालयीन लेखन को ध्यान में रख कर निर्धारित किया गया था। इससे सरकारी कामकाज को हिन्दी में बेहतर तरीके से करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों की पहचान भी सुनिश्चित की गई ।

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में
हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2018 का आयोजन

विजेताओं की सूची

क्रम	प्रथम पुरस्कार (I)	द्वितीय पुरस्कार (II)	तृतीय पुरस्कार (III)
1- हिन्दी भाषी	**निबंध प्रतियोगिता** अशोक कुमार झा, निरीक्षक	**निबंध प्रतियोगिता** सुशील कुमार, कर सहायक	**निबंध प्रतियोगिता** मयंक कालेरामना, निवारक अधिकारी
2- हिन्दी भाषी	**टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता** राजेश अहूजा,कर सहायक	**टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता** अमर कुमार, कर सहायक	**टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता** देवेन्द्र स्वरुप भार्गव,परीक्षक
हिन्दीतर भाषी	**टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता** श्रीमती स्वाती महाडीक, मुख्य लेखाधिकारी	**टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता** श्रीमती निलम ओवल, सहा.मुख्य लेखा अधिकारी	**टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता** श्रीमती दीप्ति तलेकर सहा. मुख्य लेखा अधिकारी
3-	**अनुवाद प्रतियोगिता** सुबेलाल, कर सहायक	**अनुवाद प्रतियोगिता** दीपक मीना, परीक्षक	**अनुवाद प्रतियोगिता** राजेश अहूजा, कर सहायक
4- (पक्ष में)	**वाद–विवाद प्रतियोगिता** अशोक कुमार झा, निरीक्षक निवारक अधिकारी	**वाद–विवाद प्रतियोगिता** राजेह अहूजा, कर सहायक	**वाद–विवाद प्रतियोगिता** सुबेलाल, कर सहायक
(विपक्ष में)	**वाद–विवाद प्रतियोगिता** देवेंद्र गोयल, परीक्षक	**वाद–विवाद प्रतियोगिता** दीपक मीणा, परीक्षक	
5- हिन्दी भाषी अधिकारी	**श्रुत लेखन–समूह 'क'** श्री सफरुद्दीन अहमद, सहा. आयुक्त	**श्रुत लेखन–समूह 'क'** श्री जे.पी.सिंह, उपायुक्त	**श्रुत लेखन–समूह 'क'** श्री राजीव शंकर, संयुक्त आयुक्त
हिन्दीतर भाषी अधिकारी	**श्रुत लेखन–समूह 'क'** श्री निखील मेश्राम, अपर आयुक्त	**श्रुत लेखन–समूह 'क'** श्री आलोक श्रीवास्तव, संयुक्त आयुक्त	**श्रुत लेखन–समूह 'क'** श्रीमती स्वाती महाडीक, मुख्य लेखाधिकारी
	विशेष प्रयास एस. वीरामुत्तू, उपायुक्त		

हिंदी पखवाडा समारोह,2018 की झलकियाँ

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेते सीमाशुल्क अधिकारीगण

हिंदी पखवाडा समापन समारोह 2018 के दौरान प्रधान मुख्य सीमाशुल्क आयुक्त महोदय का स्वागत करते आयुक्त महोदय

हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान करते प्रधान मुख्य आयुक्त महोदय

ग्रुप फोटो : पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं के साथ प्रधान मुख्य आयुक्त महोदय एवं अन्य आयुक्तगण

सीमाशुल्क मुंबई, अंचल- ।। मे कार्यरत श्री मनोज दास, सीमाशुल्क अधीक्षक (नि.)
व्दारा कैमरे मे कैद स्फीती घाटी, कैलाश पर्वत, लद्दाख के विहंगम दृश्य